Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَاغْفِرْ لَنَا رَبَّنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٦

(सूरः अल् मुम्ताहेना : 06)

अनुवाद : हे हमारे रब! हमें उन लोगोंके लिए आज़माइश न बना जिन्होंने कुफ़्र किया और हे हमारे रब हमें बख़्श दे निसन्देह तू कामिल ग़लबा वाला (और) साहिब-ए-हिक्मत है

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 8
अंक-13-15

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद
अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन
फ़रीद

21 रमज़ान 1444 हिज्री कमरी, 13 शहादत 1402 हिज्री शम्सी, 13 अप्रैल 2023 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

ख़ुत्बः जुमअः

बदर शामिल होने वालों को बदर में न शामिल होने वालों पर फ़ज़ीलत है (हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो)

इख़लास-ओ-वफ़ा के उदाहरण बदरी सहाबा हज़रत आमिर बिन रबिया रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत हराम बिन मिल्हान रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत साद बिन खोला रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत अबू अल्-हीसम बिन तैयहान रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत आसिम बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु , हज़रत सुहैल बिन हुनेफ़ अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत आमिर बिन अबी वक्कास रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत कुत्बा बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में कुछ रिवायत का वर्णन

हज़रत हराम रज़ियल्लाहु अन्हो ने ज़ख़्मों से निकलने वाला ख़ून हाथ में लिया और अपने मुँह पर मलते हुए कहा अलल्लाहु اَللّٰہُ اَکۡبَرُ! فُزۡتُ وَرَبِّ الۡکَعۡبَۃِ اللّٰہ اکبر ! काबा के रब की क़सम मैंने अपनी मुराद पा ली

इस (ख़ुत्बा) के बाद बदरी सहाबा के बारे में यह सिलसिला या जो मैं वर्णन करना चाहता था वह ख़त्म हो जाएगा मुख़ालेफ़ाना हालात के पेश नज़र पाकिस्तान, बुर्कीना फासो और अल्-जज़ायर में बसने वाले अहमदियों के लिए दुआएं करने और सदक़ात पर-ज़ोर देने की तहरीक

श्रीमान मुहम्मद रशीद साहिब शहीद ज़िला गुजरात, श्रीमती अमानी बस्साम मजलावी साहिबा और प्रिय सालेह अब्दुल मुईन कुनतेश आफ़ सिकंदरून तुर्की और श्रीमान मक़सूद अहमद मुनीब साहिब (मुरब्बी सिलसिला, कोयटा, पाकिस्तान) की वफ़ात पर मरहूमीन का वर्णन और नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 24 फ़रवरी 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

बदरी सहाबा जिनका वर्णन पहले हो चुका है उनके हवाले से कुछ बातों का वर्णन रह गया था जो मैं वर्णन कर रहा था। इस हवाले से आज भी वर्णन करूँगा। जिसके बाद बदरी सहाबा के बारे में यह सिलसिला या जो मैं वर्णन करना चाहता था वह ख़त्म हो जाएगा।

हज़रत आमिर बिन रबिया रज़ियल्लाहु अन्हो के बारे में लिखा है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु के पिता का नाम रबीया बिन काब बिन मालिक बन रबीया था। आप रज़ियल्लाहु अन्हु से कुछ रिवायात भी मिलती हैं। अब्दुल्लाह बिन आमिर बिन रबीया अपनी पत्नी हज़रत उम्मे अब्दुल लैला बिंत अबू हसमा से रिवायत करते हैं कि वह वर्णन करती हैं कि हम हब्शा की तरफ़ कूच करने वाले थे और आमिर बिन रबीया हमारे किसी काम के सिलसिला में कहीं गए हुए थे कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जो कि अभी हालत-ए-शिर्क में थे वहां आ निकले और मेरे सामने खड़े हो गए और हमें उनसे सख़्त तकलीफ़ और सख़्तियां पहुंची थीं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुझसे कहा। हे अब्दुल्लाह! क्या रवानगी है? मैंने कहा हाँ। अल्लाह की क़सम हम अल्लाह की ज़मीन में जाते हैं यहां तक कि अल्लाह हमारे लिए कुशादगी पैदा कर दे। तुम लोगों ने हमें बहुत दुख दिया है और हम पर बहुत सख़्तियां की हैं। इस पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनसे कहा। अल्लाह तुम्हारा निगहबान हो।

वह कहती हैं कि मैंने उस दिन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की आवाज़ में वह दर्द देखा जो पहले कभी न देखा था। इस के बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु वहां से चले गए और उनको हमारे कूच करने ने दुखी कर दिया था। वह कहती हैं कि इतने में हज़रत आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु अपने काम से फ़ारिग़ हो कर वापस आ गए तो मैंने उनसे कहा हे अब्दुल्लाह! क्या आपने अभी उम्र और उनकी रिकक्त और दुख को देखा। बताया होगा उन्होंने। हज़रत आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु ने जवाब दिया कि क्या तू उसके मुस्लमान होने का ख़ाहिशमंद है? वह कहती हैं कि मैंने कहा हाँ। इस पर हज़रत आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा। खत्ताब का गधा मुस्लमान हो सकता है परंतु वह शख़्स जिस को तू ने अभी देखा है अर्थात हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु वह इस्लाम नहीं ला सकता। हज़रत लेला कहती हैं कि हज़रत आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह बात इस नाउम्मीदी की वजह से कही थी जो उनको हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के इस्लाम की मुख़ालेफ़त और सख़्ती की वजह से पैदा हो गई थी।

(ओसोदुल गाबा भाग 3 पृष्ठ 118 आमिर बिन रबीया प्रकाशित दारुल कुतुब

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - **निगरान बदर बोर्ड क़ादियान**

इल्मिया बेरूत 2003 ई.)

(फ़ज़ायल सहाब ईमाम अहमद बिन हनबल भाग 1 पृष्ठ 279 जामिआ अल् कुरा 1983 ई.)

(अल् सीरतुल नाबावियया ले इब्ने हशशाम भाग 1 पृष्ठ 370 दारुल कुतुब बेरूत लुबनान, 1990 ई.)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन आमिर बिन रबिया रज़ियल्लाहु अन्हो अपने पिता से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें सरिया नख़ला जिसका नाम सरिया अब्दुल्लाह बिन जह्श भी है, यह ग़ज़्व-ए-बदर से पहले का है इस पर रवाना फ़रमाया और हमारे साथ हज़रत अम्र बिन सुराक़ा भी थे और वह हल्के पेट वाले और लंबे क़द वाले थे। रास्ते में उनको शदीद भूख लगी जिसकी वजह से वह दुहरे हो गए और हमारे साथ चलने की ताकत न रख सके और गिर पड़े। भूख की यह हालत थी। हमने एक पत्थर का टुकड़ा लेकर उनके पेट पर रख कर उनकी कमर के साथ मज़बूती से बांध दिया। फिर वह हमारे साथ चल पड़े। हम एक अरब क़बीले के पास पहुंचे जिन्हों ने हमारी ज़याफ़त की। इस के बाद आप रज़ियल्लाहु अन्हु चल पड़े कहा कि मैं समझता था कि इन्सान की टांगें उस के पेट को उठाए हुए होती हैं हालाँकि असल में इन्सान का पेट उस की टांगों को उठाए हुए होता है।

(मारेफ़तिल सहाब अज़ अल्लामा अबू नईम भाग 1 पृष्ठ 2004-2005 अम्र बिन सुराक़ा, दारुल वतन लिल नशर)

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ साहिबज़ादा हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम. ए. पृष्ठ 330)

जब भूख की हालत हो, फ़ाक़ा ज़दगी हो, कमज़ोरी हो फिर इन्सान चल भी नहीं सकता।

हज़रत अबू इमामा रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक मौक़े पर हज़रत आमिर बिन रबिया रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत सहल बिन हुनेफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो को जासूसी के लिए रवाना फ़रमाया।

(उद्धृत कंज़ुल उम्माल भाग 4 पृष्ठ 470 हदीस 11399 मोअसस लुबनान, 1985 ई.)

8 हिजरी में जंग ज़ातुल सिलसाल में हज़रत आमिर बिन रबीया रज़ियल्लाहु अन्हो भी शामिल थे और इस में आप रज़ियल्लाहु अन्हु के बाज़ू पर तीर लगा जिसकी वजह से आप रज़ियल्लाहु अन्हु ज़ख़्मी हो गए।

(सैर अल्लामा नबला सीरतुन्नबी भाग 2 पृष्ठ 149 ग़ज़वा ज़ात ए सिलसाल, अल्रसाल इल्मिया 1985 ई.)

अब्दुल्लाह बिन आमिर अपने वालिद हज़रत आमिर बिन रबिया रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत करते हैं कि एक मर्तबा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक क़ब्र के पास से गुज़रे तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस्तिफ़सार फ़रमाया कि यह किस की क़ब्र है? लोगों ने जवाब दिया कि अमुक औरत की क़ब्र है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाया : तुमने मुझे क्यों सूचना नहीं दी? लोगों ने अर्ज़ किया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सो रहे थे हम ने मुनासिब नहीं समझा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को जगाएं इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ऐसा न करो। मुझे अपने जनाज़ों के लिए बुलाया करो

फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वहां सफ़ें बनवाईं और इसकी नमाज़ जनाज़ा अदा की।

(मस्नद अहमद बिन हनबल, भाग 24 पृष्ठ 443 हदीस 15673 मोअससा रिसाला बेरूत) वहीं क़ब्र के ऊपर।

अब्दुल्लाह बिन आमिर वर्णन करते हैं कि उनके पिता हज़रत आमिर बिन रबिया रज़ियल्लाहु अन्हो ने बताया कि जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमें किसी सरिया में रवाना फ़रमाते थे तो हमारे पास ज़ाद-ए-राह सिर्फ़ खजूर का एक थैला होता था। अमीर-ए-लश्कर हमारे दरमयान एक मुट्ठी भर खजूर तक़सीम कर देते थे और आहिस्ता-आहिस्ता एक एक खजूर की नौबत आ जाती थी फिर आहिस्ता-आहिस्ता वह भी ख़त्म होने लगती थी तो सफ़र में फिर एक खजूर एक आदमी को मिला करती थी। हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि मैंने कहा। अब्बा जान! एक खजूर क्या किफ़ायत करती होगी? इस से पैट क्या भरता होगा? उन्होंने कहा प्यारे बेटे ऐसा न कहो क्योंकि उसकी एहमीयत हमें उस वक़्त मालूम होती जब हमारे पास वह भी नहीं होता था।

(उद्धृत **179** صفحه **1** از حلية الاولياء وطبقات الاصفياء جزء दारुल फ़िकर बेरूत लुबनान,1996 ई.) यह तो जो फ़ाक़े में हो इस से पूछो कि एक खजूर की भी क्या एहमीयत है

जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने दौर-ए-ख़िलाफ़त में ख़ैबर के इलाक़े से यहूद को निकाल दिया तो वादिए कुरा की ज़मीनें आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने जिन लोगों में तक़सीम फरमाई उनमें हज़रत आमिर बिन रबीया थे।

(किताब अख़बार المدينة النبوية از ابو زيد عمر بن شبة, भाग 1 पृष्ठ 181 अमर ख़ैबर प्रकाशन दारुल आयान)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जब जाबिया तशरीफ़ ले गए, यह दमिशक़ के देहात की एक बस्ती है, तो हज़रत आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु आप रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ थे। एक रिवायत के मुताबिक़ इस में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का झंडा हज़रत आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास था। इसी तरह हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो जब हज पर तशरीफ़ ले गए तो उन्होंने हज़रत आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु को मदीना में अपना क़ायमक़ाम मुक़र्रर फ़रमाया।

(अलासाब फ़ी तमीईज़ अल् सहाबा भाग 3 पृष्ठ 469 आमिर बिन रबीया, दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान, 1995 ई.)(मोअज्जमुल बुलदान भाग 2 पृष्ठ 91 शब्द अलजाबी के अधीन, दार सादिर बेरूत लुबनान) (सैर आलाम अल् नबलाए 2 पृष्ठ 334 आमिर बिन रबीया, रस्सालतुल इल्मिया, 1985 ई.) अमीर मुक़ामी मुक़र्रर फ़रमाया :

हज़रत आमिर बिन रबिया रज़ियल्लाहु अन्हो की वफ़ात के बारे में मतभेद पाया जाता है। कुछ के नज़दीक आप रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो के दौर-ए-ख़िलाफ़त में हुई और कुछ के मुताबिक़ 32 हिज्री में हुई जबकि कुछ के नज़दीक 33 हिज्री में हुई। कुछ के नज़दीक 36 हिज्री में और कुछ के नज़दीक 37 हिज्री में हुई। अल्लामा इब्ने असाकिर के नज़दीक 32 हिज्री वाली रिवायत ज़्यादा दरुस्त मालूम होती है।

(तारीख़ दमिशक़ अल्कबीर अज़ इब्ने असाकिर भाग 27 पृष्ठ 229 आमिर बिन रबीया, दारुल अह्या अल् तुर्रास अरबी बेरूत लुबनान,2001 ई.)

आप रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात के बारे में रिवायत में यह भी वर्णन है कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो की शहादत के बाद आप रज़ियल्लाहु अन्हु अपने घर में रहा करते थे यहां तक कि लोगों को आप रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में कोई ख़बर न हुई यहां तक कि जब आप रज़ियल्लाहु अन्हु का जनाज़ा घर से निकला।

(अल् तबकातुल कुबरा लेइब्ने साद भाग 3 पृष्ठ 296 आमिर बिन रबीया, दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान, 1990 ई.)

अब्दुल्लाह बिन आमिर अपने वालिद हज़रत आमिर बिन रबिया रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में एक शख़्स ने बनू फ़ुज़ारा की एक औरत से दो जूते हक़ महर पर निकाह कर लिया। आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस निकाह को जायज़ क़रार दिया। अर्थात यह मामूली सा जो हक़ महर था वह मुक़र्रर किया तो वह भी जायज़ है

(मस्नद अहमद बिन हनबल भाग 24 पृष्ठ 445 रिवायत नंबर 15676 मोअस्सा रिसाला बेरूत)

अब्दुल्लाह बिन आमिर अपने वालिद हज़रत आमिर बिन रबिया रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत करते हैं कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सफ़र में अपनी ऊंटनी की पीठ पर रात को नफ़्ल पढ़े। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसी तरफ़ मुँह किए हुए थे जिस तरफ़ ऊंटनी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को लिए जा रही थी।

(सही बुख़ारी किताब तक़सीर अल्सलात बाब मन तूआ फिल सफर हदीस 1104)

सफ़र में जिधर भी सवारी का मुँह हो उस तरफ़ मुँह करके नमाज़ पढ़ना जायज़ है।

हज़रत आमिर बिन रबिया रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ एक अँधेरी रात में सफ़र में था। हम एक मुक़ाम पर उतरे तो एक शख़्स ने पत्थर इकट्ठे किए और नमाज़ के लिए जगह बनाई और इस में नमाज़ पढ़ी। सुबह मालूम हुआ कि हमारा रुख ग़ैर क़िबला की तरफ़ था। क़िबले से उल्टा था। हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमने रात को क़िबले से हट कर नमाज़ पढ़ी है। इस पर कहते हैं कि अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई। وَلِلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ فَأَيْنَمَا تُوَلُّوْا فَثَمَّ وَجْهُ اللّٰهِ(अल्बक़रा : 116) कि और अल्लाह ही का है मशरिक़ भी और मग़रिब भी। अतः जिस तरफ़ भी तुम मुँह फेरो वहीं ख़ुदा का जलवा पाओगे। (حلية الاولياء وطبقات الاصفياء भाग 1 पृष्ठ 179-180

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

कुरान-ए-करीम की पैरवी से इन्सान ख़ुदा तआला की सिफ़ात का मज़हर हो जाता है

जिसगहराई से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें क़ुरआन-ए-करीम के मुक़ाम और महत्व से अवगत करवाया है वही हैजो हमें ख़ुदा तआला का सनिध्य हासिल करने और क़ुरआन-ए-करीम की तालीम पर अमल करने का फ़हम-ओ-इदराक देती है

"जबकि मैं दुनिया के समस्त नबियों का सम्मान करता हूँ और उनकी किताबों का भी सम्मान करता हूँ परंतु ज़िंदा दीन केवल इस्लाम को ही मानता हूँ क्योंकि इसके माध्यम से मेरे पर ख़ुदा ज़ाहिर हुआ " (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

"मेरे निकट धर्म वही है जो ज़िंदा धर्म है और ज़िंदा और ताज़ा क़ुदरतों के नज़्ज़ारे से ख़ुदा को दिखलावे अन्यथा केवल दावा धर्म के पूर्ण होने का अपूर्ण और तर्कहीन है"(हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

यदिहम क़ुरआन-ए-करीम को मानते हैं और फिर इस्लाह नहीं होती तो इस में हमारा क़सूर है क्योंकि जैसा कि आप ने फ़रमाया कामिलपैरवी ज़रूरी है। कामिल पैरवी अगर नहीं करेंगे तो किस तरह इस्लाह होगी। इस पर अमल नहीं करेंगे तो किस तरह इस्लाह होगी। अतः हमें कोशिश करनी चाहिए कि हम कामिल पैरवी करने वाले हों। अल्लाह तआला इसकी तौफीक दे।

हक़ीक़त में रूह की तसल्ली और परिपूर्णतः का सामान और वह बात जिससे रूह की हक़ीक़ी एहतेयाज पूरी होती है क़ुरआन-ए-करीम ही में है आज यह हम अहमदियों का काम है कि हम अपने अंदर तक़्वा पैदा करते हुए इस तालीम की ख़ूबियों को अपने क़ौल और फ़ेअल से करके दिखाएंगे, अमल करके अब दिखाएंगे। दुनिया को बताएं कि क़ुरआन-ए-करीम ही है जो हर किस्म की बिमारियों का ईलाज है और इसको भेजने वाला वह ख़ुदा है जिसने उसे बामक़सद बना कर दुनिया की इस्लाह के लिए भेजा है। अल्लाह तआला हमें तक़्वा पर चलते हुए इस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फरमाए

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इर्शादात और तहरीरात की रोशनी में क़ुरआन-ए-करीम की विशेषोताओं, मुक़ाम और का वर्णन मुख़ालेफ़ाना हालात के पेश नज़र बंगलादेश, पाकिस्तान, बुर्कीनाफासो और अल-जज़ायर में बसने वाले अहमदियों के लिए की तहरीक

अल्लाह तआला अहमदियों को उनके उपद्रव से भी महफ़ूज़ रखे और उनकी पकड़ के भी सामान करे। अब तो उनके लिए कोई हिदायत की दुआ नहीं हो सकती। اَللّٰھُمَّ مَزِّقْھُمْ کُلَّ مُمَزَّقٍ وَسَحِّقْھُمْ تَسْحِیْقً ۔ वाली दुआ ही है जो उनके लिए हमारे मुँह से निकलती है, दिल से निकलती है।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 03 मार्च 2023 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने क़ुरआन-ए-करीम की जो मार्फ़त हमें अता फ़रमाई है या अपनी कुतुब और इर्शादात में इस मार्फ़त को समझने और इस पर अमल करने के लिए जिस अंदाज़ में उसे पेश फ़रमाया है इस हवाले से मैंने गुज़शता जमाओं में दो ख़ुतबात दिए हैं।

क़ुरआन-ए-करीम जो मार्फ़त का ख़ज़ाना देता है।

हक़ीक़त में यही है जो बंदे को ख़ुदा तआला से मिलाता है।

इस के बग़ैर ख़ुदा तआला को पाने का, उस का क़ुरब हासिल करने का कोई और ज़रीया नहीं है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने एक शेअर में फ़रमाते हैं

"क़ुरआँ ख़ुदा नुमा है ख़ुदा कलाम है
बे उस के मार्फ़त का चमन ना तमाम है"

(नसरुल-हक़ बराहीन-ए-अहमदिया हिस्सा पंजुम, रुहानी ख़ज़ायन भाग 21 पृष्ठ 12)

अतः यह वह नुक़्ता है जिसे हमें हमेशा अपने सामने रखना चाहिए।

अगर हम ख़ुदा तआला का क़ुरब और इस की रज़ा चाहते हैं, अगर हम अपनी दुनिया-ओ-आक़िबत को सँवारना चाहते हैं तो यह चीज़ें याद रखनी चाहिऐं।

यह बात याद रखनी चाहिए कि क़ुरआन-ए-करीम ही वह है लेकिन यह भी याद रखना चाहिए कि इस मार्फ़त को समझने के लिए भी अल्लाह तआला की तरफ़ से भेजे हुए और मुक़र्रर करदा किसी राहनुमा की ज़रूरत है जो इस ज़माने में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ग़ुलाम सादिक़ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हैं।

आप ने कुरान-ए-करीम के विभिन्न पहलूओं पर जिस तरह गहराई में जा कर रोशनी डाली है और इस के हुस्न से अवगत फ़रमाया है जैसा कि मैं ने कहा कि वह पिछले दो ख़ुतबात में मैं ने वर्णन किया था। आप अलैहिस्सलाम के वर्णन करदा इलम-ओ--मार्फ़त के इस खज़ाने और कुरान-ए-करीम की तालीम को समझने का यह सिलसिला अभी ख़त्म नहीं हुआ बल्कि अभी काफ़ी मवाद इस बारे में वर्णन करने वाला है। आज भी इस सिलसिले को जारी रखते हुए मैं क़ुरआन-ए-करीम की विशेषोताओं और मुक़ाम और एहमियत का वर्णन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इर्शादात-ओ-तहरीरात रोशनी में करूँगा जिस गहराई से आप ने हमें क़ुरआन-ए--करीम के मुक़ाम और एहमियत से आगाही दी है जो हमें ख़ुदा तआला का क़ुरब हासिल करने और क़ुरआन-ए-करीम की तालीम पर अमल करने का फ़हम-ओ--इदराक देती है।

अतः बड़े ग़ौर से हमें इन बातों को सुनने और समझने की कोशिश करनी चाहिए ताकि हम अपनी ज़िंदगी के मक़सद को हासिल करने वाले हों इस बात की वज़ाहत फ़रमाते हुए कि क़ुरआन ख़ुदा कलाम हैं।

लाला भीम सेन के नाम एक ख़त में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम तहरीर फ़रमाते हैं कि "अभी थोड़े दिन की बात है कि लेखराम नामी एक ब्रहमन जो आर्या था, कादियान में मेरे पास आया और कहा कि वेद ख़ुदा का कलाम है। कुरान-ए--शरीफ़ ख़ुदा का कलाम नहीं है। मैंने उसको कहा कि चूँकि तुम्हारा दावा है कि वेद ख़ुदा का कलाम है मगर मैं इस को इस की मौजूदा हैसियत के लिहाज़ से ख़ुदा का कलाम नहीं जानता क्योंकि इस में शिर्क की तालीम है।" जिसमें शिर्क की तालीम हो वह ख़ुदा का कलाम किस तरह हो सकता है और इस के इलावा "और कई और नापाक तालीमें हैं। परंतु मैं कुरान-ए-शरीफ़ को ख़ुदा का कलाम जानता हूँ क्योंकि न इस में शिर्क की तालीम है और न कोई और नापाक तालीम है। और इस की पैरवी

से ज़िंदा ख़ुदा का चेहरा नज़र आ जाता है और मोजज़ात ज़ाहिर होते हैं।"

(मकतूबात-ए-अहमद भाग 1 पृष्ठ 90)

अतः ख़ुदा तआला के कलाम होने की शर्त यह है कि वह शिर्क से पाक हो और इस पर अमल करने से ख़ुदा तआला का चेहरा नज़र आए।

क़ुरान-ए-करीम ने किस तरह ख़ुदा तआला का चेहरा दिखाने में अपना किरदार अदा किया। इस बात को सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़िंदगियों में देखा जा सकता है। इसलिए "क़ुरआन-ए-करीम की तालीम का सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो पर-असर' का वर्णन फ़रमाते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ज़माना जो सदर-ए-इस्लाम का वक़्त था इस ज़माना पर एक वसीअ नज़र डाल कर साबित होता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तालीम ने क्योंकर ईमान लाने वालों को मज़कूरा बाला अदना दर्जा से आला दर्जा तक पहुंचा दिया क्योंकि ईमान लाने वाले अपनी इबतेदाई हालत में अक्सर ऐसे थे कि जिस हालत को वह साथ लेकर आए थे वह हालत जंगली वहशियों से बदतर थी और दरिंदों की तरह उनकी ज़िंदगी थी और इस क़दर बदआमाल और बदअख़लाक़ में वह मुबतला थे कि इन्सानियत से बाहर हो चुके थे और ऐसे बेशऊर हो चुके थे कि नहीं समझते थे कि हम बदआमाल हैं यानी नेकी और बदी की शनाख़्त की हिस भी जाती रही थी। अतः क़ुरआन-ए-करीम की तालीम और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सोहबत ने जो पहला असर उन पर किया तो वह यह था कि इन को महसूस हो गया कि हम पाकीज़गी के जामा से बिल्कुल नंगे और बदआमाली के गंद में गिरफ़्तार हैं जैसा कि अल्लाह तआला उनकी पहली हालत की निसबत फ़रमाता है । اُولٰٓئِكَ كَالۡاَنۡعَامِ بَلۡ هُمۡ اَضَلُّ(अल् ऐराफ़ : 180) अर्थात ये लोग चारपाईयों की तरह हैं बल्कि उनसे भी बदतर। फिर जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पाक सोहबत और फ़ुरकान-ए-हमीद की दिलकश तासीर से उनको महसूस हो गया कि जिस हालत में हमने ज़िंदगी बसर की है वह एक वहशयाना ज़िंदगी है और सरासर बद आमालियों से मुलव्वस है तो उन्होंने रूहूल क़ुदस से क़ुव्वत पा कर नेक-आमाल की तरफ़ हरकत की जैसा कि अल्लाह तआला उनके हक़ में फ़रमाता है وَاَيَّدَهُمۡ بِرُوۡحٍ مِّنۡهُ(अल् मुजादलः : 23) अर्थात ख़ुदा ने एक पाक रूह के साथ उनकी ताईद की। वह वही ग़ैबी ताक़त थी जो ईमान लाने के बाद और किसी क़दर सब्र करने के बाद इन्सान को मिलती है। फिर वे लोग इस ताक़त के हासिल होने के बाद न केवल इस दर्जा पर रहे कि अपने ऐबों और गुनाहों को महसूस करते हूँ और उनकी बदबू से बेज़ार हूँ बल्कि अब वह नेकी की तरफ़ इस क़दर क़दम उठाने लगे कि सलाहीयत के कमाल को नसफ़ तक तै कर लिया और कमज़ोरियों के मुक़ाबिल पर नेक-आमाल की बजा आवरी में ताक़त भी पैदा हो गई।" न सिर्फ कमज़ोरियाँ दूर कीं बल्कि नेकियों में क़दम बढ़ते गए।" और इस तरह पर दरमयानी हालत उनको हासिल हो गई और फिर वह लोग रूहुल-क़ुदस की ताक़त से परिपूर्ण हो कर उन मुजाहिदात में लगे कि अपने पाक आमाल के साथ शैतान पर ग़ालिब आ जाएं। तब उन्हों ने ख़ुदा के राज़ी करने के लिए इन मुजाहिदात को इख़्तेयार किया कि जिनसे बढ़कर इन्सान के लिए मुतसव्वर नहीं। उन्होंने ख़ुदा की राह में अपनी जानों का ख़स-ओ-ख़ाशाक की तरह भी क़दर नहीं की। आख़िर वह क़बूल किए गए और ख़ुदा ने उनके दिलों को गुनाह से पूर्णतः बेज़ार कर दिया और नेकी की मुहब्बत डाल दी।"

(चशमा मार्फ़त, रुहानी ख़ज़ायन भाग 23 पृष्ठ 424-425)

अतः यह है क़ुरआन करीम का उन पर-असर कि वह ज़मीन से उठे और आसमान के चमकदार सितारे बन गए जिनके बारे में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि उनमें से हर एक तुम्हारे लिए है।

(अल् मिशकातुल मसाबिह भाग 3 पृष्ठ 1696 كتاب المناقب باب مناقب الصحابةؓ हदीस 6009 مطبوعہ مکتب الاسلامی بیروت बेरूत1979 ई.)

क़ुरान-ए-करीम की पैरवी से इन्सान ख़ुदा तआला की सिफ़ात का मज़हर हो जाता है।

यह बात वर्णन फ़रमाते हुए आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : जो शख़्स क़ुरान-ए-शरीफ़ का अनुयाई हो कर मुहब्बत और सिदक़ को इंतेहा तक पहुंचा देता है वह जिल्ली तौर पर ख़ुदा तआला की सिफ़ात का मज़हर हो जाता है। सिर्फ पैरौ होना शर्त नहीं बल्कि मुहब्बत और सिदक़ को इंतिहा तक पहुंचाना शर्त है अर्थात उसके अहकामात पर मुकम्मल अमल हो तब वह अल्लाह तआला की सिफ़ात का मज़हर है। फिर फ़रमाया : यह सब नतीजा इस ज़बरदस्त ताक़त और ख़ासीयत का होता है जो ख़ुदा के कलाम क़ुरआन शरीफ़ में हम मुशाहिदा करते हैं। वह ज़बरदस्त ताक़त और ख़ासीयत किसी और किताब में नहीं जो किसी क़ौम के नज़दीक इल्हामी समझी जाती है। शायद उस का यह सबब हो कि वे किताबें दूर होने के कारण से दराज़ ज़मानों के परिवर्ती हो चुकी हैं या शायद ये सबब हो कि जबकि लफ़्ज़ उन के मुहर्रिफ़-ओ-मुबद्दल नहीं हुए परंतु माने बिगाड़ दिए गए हैं या शायद ये सबब हो कि ख़ुदा ने इस आख़िरी ज़माने में तफ़र्रुक़ा दूर करने के लिए और दुनिया के तमाम लोगों को सिर्फ एक किताब पर जमा करने के लिए इन तमाम पहली किताबों की बरकतें मस्लूब करली हैं अन्यथा उस का सबब क्या है कि जिस तरह क़ुरआन शरीफ़ और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्ची पैरवी से इन्सान जमाअत-ए-औलिया अल्लाह में दाख़िल हो सकता है, इन किताबों में यह ख़ासीयत पाई नहीं जाती और यही वजह है कि इन किताबों के पैरौ उन कमालात से मुनकिर हैं जो इन्सान को क़ुरब के मकान में हासिल हो सकते हैं बल्कि वह करामात और ख़रिक़ आदात पर हंसी ठट्ठा करते हैं। मोजज़ात को न सिर्फ मानते नहीं बल्कि उन पर हंसी ठट्ठा भी करते हैं और यही आज वजह है कि ख़ुदा तआला से दूर हो गए हैं, मज़हब से दूर हो गए हैं। फिर फ़रमाया : परंतु हम उन पर कोई हंसी ठट्ठा नहीं करते। किसी पर हम हंसी ठट्ठा नहीं करते हाँ उनकी महरूमी को देखकर रोना ज़रूर है।

इनकी हमदर्दी है हमारे दिल में कि अल्लाह तआला से दूर जा कर, उसकी सिफ़ात को भूल कर नए ज़माने की रोशनी का अपने ग़लत रोयो को नाम देकर दुबारा जानवरों वाली हरकतें करने लग गए हैं और यही कुछ हमे आजकल माद्दियत परस्तों में नज़र आता है।

बहरहाल अपनी बात के तसलसुल में आप अलैहिस्सलाम आगे फ़रमाते हैं कि मैं इस जगह कुछ गुज़शता क़िस्सों को वर्णन नहीं करता बल्कि मैं वही बातें करता हूँ जिनका मुझे ज़ाती इल्म है। मैं ने क़ुरआन शरीफ़ में एक ज़बरदस्त ताक़त पाई है। मैं ने आँ-हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पैरवी में एक अजीब ख़ासीयत देखी है जो किसी मज़हब में वह ख़ासीयत और ताक़त नहीं और वह यह कि सच्चा पैरौ उसका मुक़ामात विलायत तक पहुंच जाता है। ख़ुदा उसको न सिर्फ अपने क़ौल से मुशर्रफ़ करता है बल्कि अपने फ़ेअल से उसको दिखलाता है कि मैं वही ख़ुदा हूँ जिसने ज़मीन-ओ-आसमान पैदा किया तब उस का ईमान बुलंदी में दूर दूर के सितारों से भी आगे गुज़र जाता है। इसलिए मैं इस अमर में साहब-ए-मुशाहिदा हूँ। ख़ुदा मुझसे हमकलाम होता है और एक लाख से भी ज़्यादा मेरे हाथ पर इस ने निशान हैं। अतः जबकि में दुनिया के तमाम नबियों का अदब करता हूँ और उनकी किताबों का भी अदब करता हूँ परंतु ज़िंदा दीन सरफ इस्लाम को ही मानता हूँ क्योंकि उस के ज़रीया से मेरे पर ख़ुदा ज़ाहिर हुआ।

फिर आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि जिस शख़्स को मेरे इस वर्णन में शक हो उसको चाहिए कि इन बातों की तहक़ीक़ के लिए मेरे पास आ के दो माह के लिए ठहरे। मैं उस के तमाम अख़राजात का जो उस के लिए काफ़ी हो सकते हैं इस मुद्दत तक मुतकफ़्फ़िल रहूँगा। फ़रमाया कि मेरे नज़दीक मज़हब वही है जो ज़िंदा मज़हब है और ज़िंदा और ताज़ा क़ुदरतों के नज़्ज़ारे से ख़ुदा को दिखलावे अन्यथा सिर्फ दावा सेहत मज़हब हैच और बिना दलील के है।

(उद्धृत चशमा मार्फ़त, रुहानी ख़ज़ायन भाग 23 पृष्ठ 427-428)

जिन्हों ने आप की इस दावत से फ़ैज़ पाना था उन्होंने फ़ैज़ पाया और कामयाब हो गए। आप अलैहिस्सलाम के पास रहे और स्वीकार किया।

आज भी आप का इल्म-ए-कलाम जो है और ख़ज़ायन जो हैं बहुत सों को ख़ुदा नुमा बना रहा है। अतः इस से जहां हम ग़ैरों को आगाह करें हमें ख़ुद भी पूरी कोशिश करनी चाहिए और आप के कलाम से फ़ायदा उठाना चाहिए। तभी हम अपनी बैअत के मक़सद को भी पूरा कर सकते हैं।

फिर क़ुरआन-ए-करीम की ख़ूबियां वर्णन फ़रमाते हुए आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं। क़ुरआन-ए-करीम की एजाज़ी ख़ूबयां हैं जिनकी तफ़सील यह फ़रमाई कि "क़ुरआन शरीफ़ की एजाज़ी ख़ूबियों में से एक बलाग़त फ़साहत भी है जो इन्सानी बलाग़त फ़साहत से बिल्कुल मुमताज़ और अलग है क्योंकि इन्सानी बलाग़त फ़साहत का मैदान निहायत तंग है और जब तक किसी कलाम में मुबालग़ा या झूठ या ग़ैर ज़रूरी बातें न मिलाई जाएं तब तक कोई इन्सान बलाग़त फ़साहत के आला दर्जा पर क़ादिर नहीं हो सकता।" अल्लाह तआला का कलाम इस से बिल्कुल पाक है, कोई मलूनी नहीं। "दूसरे क़ुरआन शरीफ़ की एक मोजज़ाना ख़ूबी यह है कि जिस क़दर उसने क़िस्से वर्णन किए हैं दरहक़ीक़त वे समस्त भविष्यवाणियां हैं जिनकी तरफ़ समय समय पर इशारा भी किया है।" यह भी क़ुरआन-ए-करीम में नज़र आता है। "तीसरे क़ुरआन-ए-करीम में यह मोजज़ाना ख़ूबी है कि इसकी तालीम इन्सानी फ़ित्रत को इसके कमाल तक पहुंचाने के लिए पूरा पूरा सामान अपने अंदर रखती है और मर्तबा

यक़ीन हासिल करने के लिए जिन दलायल और निशानों की इन्सान को ज़रूरत है सब इस में मौजूद हैं। चौथे एक बड़ी ख़ूबी इस में यह है कि वह कामिल पैरवी करने वाले को ख़ुदा से ऐसा नज़दीक कर देता है कि वह मुकालमा इलाही का शरफ़ पा लेता है और खुले खुले निशान इस से ज़ाहिर होते हैं और तज़किया नफ़्स और ईमानी इस्तक़ामत उसको हासिल होती है और क़ुरआन शरीफ़ का यह नुक्ता निहायत ही याददाश्त के लायक़ है कि मोमिन कामिल पर जो फ़ैज़ान आसमानी निशानों का होता है। वह तो एक ख़ुदा का फ़ेअल है। इस की वजह से कोई अपनी ख़ूबी क़रार नहीं दे सकता। मोमिन-ए-कामिल की अपनी ज़ाती ख़ूबी तक़्वा तहारत और क़ुव्वत ईमान और इस्तक़ामत है उदाहरणतः जैसे अगर किसी दीवार पर आफ़ताब की रोशनी पड़े तो वह रोशनी इस दीवार की ख़ूबियों में दाख़िल नहीं क्योंकि वह इस से अलग भी हो सकती है बल्कि दीवार की ख़ूबी यह है कि इस की बुनियाद एक मज़बूत पत्थर पर हो और ऐसी पुख़्ता और रेख़्ता की इमारत हो कि गो कैसे ही सेलाब आवें और तेज़ हवाएं चलीं और तूफ़ान की तरह मीना बरसीं इस दीवार में जुंबिश न आए।"

(चशमा मार्फ़त, रुहानी ख़ज़ायन भाग 23 पृष्ठ 268 हाशिया)

अतः ईमान की भी ऐसी हालत होनी चाहिए।

क़ुरआन-ए-करीम को ख़ुदा तआला का मुक़द्दस कलाम समझ कर इस पर अमल की भी ऐसी हालत होनी चाहिए कि यही है जो हमारे ईमानों को मज़बूत करता है, हमें ख़ुदा से मिलाता है कि कोई आंधी कोई तूफ़ान कोई मुख़ालफ़त इन्सान को अपने ईमान से हिला सके।

यह है इन्सान की ख़ूबी कि हमेशा इस पर ख़ुदा तआला के कलाम की रोशनी पड़ती रहे और इस को समझने की वह कोशिश करता रहे

फिर फ़रमाया कि कुरान-ए-करीम एक ऐसी किताब है कि जिसकी पैरवी के नतीजा में दुआएं क़बूल होती हैं

तफ़सील वर्णन फ़रमाते हुए फ़रमाते हैं कि "क़ुरआन शरीफ़ की मोजज़ाना तासीरात से एक यह भी है कि इस की कामिल पैरवी करने वाले दर्जा क़बूलीयत का पाते हैं और उनकी दुआएं क़बूल हो कर ख़ुदा तआला अपनी कलाम-ए-लज़ीज़ और प्रभाव के ज़रीया से उनको सूचना देता है और खासतौर पर दुश्मनों के मुक़ाबिल पर उनकी मदद करता है और ताईद के तौर पर अपने ग़ैब-ए-ख़ास पर उनको अवगत फ़रमाता है।"

(चशमा मार्फ़त, रुहानी ख़ज़ायन भाग 23 पृष्ठ 271 हाशिया)

इस बात को वर्णन फ़रमाते हुए कि क़ुरआन-ए-करीम में हिदायतें हैं

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि

"अतः अरब के मुश्रिकों की तरह उस देश के अहले किताब भी अपराधी स्वभाव के हो गए थे। ईसाइयों ने तो कफ्फराः के विषय पर ज़ोर देकर और उस पर भरोसा करके यह समझ लिया था कि हम पर सब अपराध वैध हैं और यहूदी कहते थे कि हम अपराध करने के कारण केवल कुछ दिन नर्क में पड़ेंगे इससे अधिक नहीं। जैसा कि इस बारे में अल्लाह तआला फ़रमाता है-

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لَن تَمَسَّنَا النَّارُ إِلَّا أَيَّامًا مَّعْدُودَاتٍ وَغَرَّهُمْ فِي دِينِهِم مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ

(आले इमरान-25)

अनुवाद)- यह दिलेरी और साहस उनको इसलिए पैदा हुआ कि उनका) कहना है कि नर्क की आग यदि हमें छुएगी भी तो केवल कुछ दिन तक रहेगी और जो वे झूठी बातें गढ़ते हैं उन्हीं पर अकड़ने से उनके यह विचार हैं।

अतः जब अरब के अहले किताब और मुश्रिक अत्यधिक दुष्कर्मी हो चुके थे तथा बुराई करके समझते थे कि हमने नेकी का काम किया है और अपराधों से नहीं रुकते थे तथा लोगों के अमन चैन में विघ्न डालते थे तो ख़ुदा तआला ने अपने नबी के हाथ में शासन की बागडोर देकर उनके हाथ से ग़रीबों को बचाना चाहा और चूंकि अरब का देश निरंकुश था तथा वे लोग किसी बादशाह की हकूमत के अधीन नहीं थे। इसलिए प्रत्येक समुदाय बहुत आज़ाद और निडर होकर जीवन व्यतीत करता था, और चूंकि उनके लिए कोई दण्ड का क़ानून न था इसलिए वे लोग दिन-प्रतिदिन अपराधों में बढ़ते जाते थे। तो ख़ुदा ने उस देश पर दया (रहम) करके-----आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उस देश के लिए न केवल रसूल बनाकर भेजा बल्कि उस देश का बादशाह भी बना दिया और पवित्र क़ुर्आन को एक ऐसे क़ानून की तरह पूर्ण कर दिया जिसमें दीवानी, फ़ौजदारी और आर्थिक सब निर्देश हैं। अतः आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक बादशाह होने की हैसियत से समस्त समुदायों के हाकिम (शासक) थे और हर एक धर्म के लोग अपने मुक़द्दमों का फ़ैसला आप से कराते थे। पवित्र क़ुर्आन से सिद्ध है कि एक बार एक मुसलमान और एक यहूदी का आप की अदालत में मुक़द्दमा आया तो आप ने छान-बीन करने के बाद यहूदी को सच्चा ठहराया और मुसलमान पर उसके दावे की डिग्री की। कुछ नादान विरोधी जो ध्यानपूर्वक पवित्र क़ुर्आन नहीं पढ़ते वे हर एक विषय को आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत के अधीन ले आते हैं। हालांकि ऐसे दण्ड ख़िलाफ़त अर्थात् बादशाहत की हैसियत से दिए जाते थे।

(चशमा मार्फ़त, रुहानी ख़ज़ायन भाग 23 पृष्ठ 242-243)

फिर कुरान-ए-करीम के ज़रीया पाकीज़ा के हसूलल के मज़मून को वर्णन फ़रमाते हुए आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"यह तो स्पष्ट है कि प्रत्येक वस्तु की बड़ी ख़ूबी यही समझी जायेगी कि जिस उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए वह बनायी गयी है उस उद्देश्य को उत्तम रंग में पूर्ण कर सके। उदाहरणतया यदि किसी बैल को खेत जोतने के लिए खरीदा गया है तो उस बैल की यही ख़ूबी (विशेषता) देखी जाएगी कि वह बैल खेत जोतने के काम को उत्तम रंग में अदा कर सके। इसी प्रकार स्पष्ट है कि आकाशीय पुस्तक का मूल उद्देश्य यही होना चाहिए कि अपने अनुकरण करने वाले को अपनी शिक्षा, प्रभाव, सुधार की शक्ति तथा अपनी रूहानी विशेषता से प्रत्येक गुनाह और अपवित्र जीवन से मुक्त करके एक पवित्र जीवन प्रदान करे और फिर पवित्र करने के पश्चात् ख़ुदा को पहचानने के लिए एक पूर्ण प्रतिभा प्रदान करे और उस अद्वितीय अस्तित्त्व के साथ जो समस्त खुशियों का उद्गम है प्रेम और मुहब्बत का संबंध प्रदान करे। क्योंकि वास्तव में यही प्रेम मुक्ति की जड़ है और यही वह स्वर्ग है जिसमें प्रवेश करने के पश्चात् समस्त परेशानी और कड़वाहट, चिन्ता और अज़ाब दूर हो जाता है। निस्सन्देह जीवित और कामिल (सम्पूर्ण) इल्हामी पुस्तक वही है जो ख़ुदा के अभिलाषी को उस उद्देश्य तक पहुंचा दे तथा उसे घटिया जीवन से मुक्ति देकर उस वास्तविक प्रियतम से मिला दे जिसका मिलाप सर्वथा मुक्ति है और समस्त सन्देहों एवं शंकाओं से मुक्ति देकर उसे ऐसा व्यापक ज्ञान प्रदान करे कि मानो वह अपने ख़ुदा को [p.292]देख ले और ख़ुदा के साथ उसको ऐसे सुदृढ़ संबंध प्रदान करे कि वह ख़ुदा का वफ़ादार बन्दा बन जाए और ख़ुदा उस पर ऐसी भलाई और उपकार करे कि अपनी भिन्न-भिन्न प्रकार की सहायता, मदद और समर्थन से उसमें और उसके ग़ैर में अन्तर करके दिखाए तथा उस पर अपनी मारिफ़त के दरवाजे खोल दे। यदि कोई पुस्तक अपने इस कर्तव्य को पूरा न करे जो उसका मूल कर्तव्य है और अन्य निरर्थक दावों से अपनी ख़ूबी सिद्ध करना चाहे तो उसका यही उदाहरण है कि एक व्यक्ति माहिर चिकित्सक होने का दावा करे और जब कोई रोगी उसके सामने लाया जाए कि इसे अच्छा करके दिखाओ तो वह यह उत्तर दे कि मैं इसे अच्छा तो नहीं कर सकता परन्तु मैं कुश्ती करना अच्छी तरह जानता हूँ या यह कहे कि मुझे अन्तरिक्ष विज्ञान और दर्शन शास्त्र में बहुत महारत है। स्पष्ट है कि ऐसा व्यक्ति जोकर ही कहलाएगा और बुद्धिमानों के नज़दीक डाँट-डपट के योग्य होगा। ख़ुदा की पुस्तक और ख़ुदा के रसूल जो संसार में आते हैं उनका बड़ा उद्देश्य यही होता है कि संसार को पाप और गुनाह के जीवन से छुटकारा दिला दें और ख़ुदा से पवित्र संबंधों को स्थापित करें। उनका यह उद्देश्य तो नहीं होता कि संसार की विद्याएं उनको सिखा दें और संसार के आविष्कारों से उनको अवगत करें।

अतः एक बुद्धिमान और न्यायप्रिय स्वभाव रखने वाले आदमी के नज़दीक इस बात का समझना कुछ कठिन नहीं है कि ख़ुदा की पुस्तक का कर्तव्य यही है कि वह ख़ुदा को मिला दे और ख़ुदा की हस्ती (अस्तित्त्व) के बारे में विश्वास की श्रेणी तक पहुंचा दे और ख़ुदा की श्रेष्ठता और भय दिल में बिठा कर गुनाह करने से रोक दे। अन्यथा हम ऐसी पुस्तक को क्या करें जो न दिल की गन्दगी दूर कर सकती है और न ऐसी पवित्र और पूर्ण मारिफ़त प्रदान कर सकती है जो गुनाह से नफ़रत करने का कारण हो सके। याद रहे कि गुनाह की रुचि का कोढ़ बहुत ही ख़तरनाक कोढ़ है और यह कोढ़ किसी प्रकार दूर नहीं हो सकता जब तक कि ख़ुदा की जीवित मारिफ़त की चमकारें उसका भय, श्रेष्ठता और क़ुदरत के निशान वर्षा के समान न आएं और जब तक मनुष्य ख़ुदा को उसकी भयभीत करने वाली शक्तियों के साथ ऐसा निकट न देखे जैसे वह बकरी जब शेर को देखती है कि वह केवल उस से दो क़दम की दूरी पर है मनुष्य को यह आवश्यकता है कि वह गुनाह की घातक भावनाओं से बच जाए और उसके दिल में ख़ुदा की महानता इतनी (अधिक) बैठ जाए कि वह विवश करने वाली कामवासनाओं की चाहत जो बिजली की तरह उस पर गिरती तथा उसके संयम को एक पल में जला देती है वह दूर हो जाए। परन्तु क्या वे अपवित्र भावनाएँ जो मिर्गी की तरह बार-बार पड़ती हैं और संयम के होश-व-हवास को खो देती हैं वे केवल अपने ही बनाए हुए परमेश्वर की कल्पना से दूर हो सकती हैं या केवल अपने ही प्रस्तावित विचारों से दब सकती हैं और या किसी ऐसे कफ़्फ़ारे से रुक सकती है जिस का दुःख अपने नफ़्स को छुआ भी नहीं? हरगिज़ नहीं, यह बात मामूली नहीं बल्कि सब बातों से बढ़कर बुद्धिमान के नज़दीक विचार करने योग्य यही बात है कि वह

तबाही जो उस गुस्ताख़ी और संबंध न होने के कारण सामने आने वाली है जिसकी असली जड़ गुनाह और अवज्ञा है उससे क्योंकर सुरक्षित रहे। यह तो स्पष्ट है कि मनुष्य निश्चित आनन्दों को केवल काल्पनिक विचारों से छोड़ नहीं सकता, हां एक विश्वास दूसरी विश्वसनीय बात से अलग कर सकता है।

लज़्ज़तें जो मिलती हैं उनमें कुछ यक़ीनी लज़्ज़ात हैं इस को इस बात से सिर्फ भ्रम करके यह कहना कि होगा, यह हमें इंशाअल्लाह मिलेगा, बाद में मिलेगा, कब मिलेगा? किस तरह होगा? इस को छोड़ नहीं सकता। "हाँ" फ़रमाया कि लेकिन "एक यक़ीन दूसरे यक़ीनी अमर से दस्तबरदार करा सकता है। उदाहरणतः एक के मुताल्लिक़ एक "अर्थात जंगल है इस के मुताल्लिक़ "यक़ीन है कि इस जगह से कई हिरन हम बाआसानी पकड़ सकते हैं और हम इस यक़ीन की तहरीक पर क़दम उठाने के लिए मुस्तइद हैं परंतु जब ये दूसरा यक़ीन हो जाएगा कि वहां पच्चास शेर बब्बर मौजूद हैं और हज़ारहा ख़ूँख़ार अज़दहा भी हैं जो मुँह खोले बैठे हैं तब हम इस इरादा से दस्तकश हो जाऐंगे। इसी तरह बग़ैर इस दर्जा यक़ीन के गुनाह भी दूर नहीं हो सकता।" गुनाह दूर करने का यह तरीक़ा है कि यह यक़ीन हो कि अगर हम ये गुनाह करेंगे तो हमें ज़ाती वक़्ती लज़्ज़ात तो हैं लेकिन इसको करने से इसी तरह है जिस तरह हमने एक जंगल में जहां हम शिकार को चले जाएं और वहां शेर बब्बर भी हो और अज़दहा भी हों और उनका ख़ौफ़ हमें वहां शिकार न करने दे तो

इसी तरह गुनाहों से बचा जा सकता है कि अगर यह यक़ीन पैदा हो जाए कि ख़ुदा तआला की पकड़ बड़ी सख़्त है। और अगर हम गुनाह करेंगे तो इस की पकड़ में आ सकते हैं

फ़रमाया कि "लोहा लोहे से ही टूटता है। ख़ुदा की अज़मत और हैबत का वह यक़ीन चाहिए जो ग़फ़लत के पर्दों को पाश पाश कर दे और बदन पर एक लर्ज़ा डाल दे और मौत को क़रीब करके दिखलादे और ऐसा ख़ौफ़ दिल पर ग़ालिब करे जिससे समस्त इच्छाओं के पौधे नफ़्स-ए-अम्मारा के टूट जाएं और इन्सान एक ग़ैबी हाथ से ख़ुदा की तरफ़ खींचा जाए और इसकी दिल इस यक़ीन से भर जाए कि दरहक़ीक़त ख़ुदा मौजूद है जो बे-बाक मुजरिम को बे-सज़ा नहीं छोड़ता। अतः एक हक़ीक़ी पाकीज़गी का तालिब ऐसी किताब को क्या करे जिसके ज़रीया से यह ज़रूरत रफ़ा न हो सके? इस लिए मैं हर एक पर यह बात ज़ाहिर करता हूँ कि वह किताब जो इन ज़रूरतों को पूरा करती है वह क़ुरआन शरीफ़ है इस के ज़रीया से ख़ुदा की तरफ़ इन्सान को एक कशिश पैदा हो जाती है और दुनिया की मुहब्बत सर्द हो जाती है और वह ख़ुदा जो निहायत निहां दर निहां है इस की पैरवी से आख़िर कार अपने तईं ज़ाहिर करता है और वह क़ादिर जिसकी क़ुदरतों को ग़ैर कौमें नहीं जानतीं क़ुरआन की पैरवी करने वाले इन्सान को ख़ुदा ख़ुद दिखा देता है।" और यह वाक्य याद रखना चाहिए कि क़ुरआन की पैरवी करने वाले इन्सान को ख़ुदा ख़ुद दिखा देता है "और आलम-ए--मलकूत का उसको सैर कराता है और अपने اَنَا الْمَوْجُوْد होने की आवाज़ से आप अपनी हस्ती की इस को ख़बर देता है।"

अतः यह है वह फ़हम-ओ-इदराक जो क़ुरआन शरीफ़ के बारे में होना चाहिए। यह इस तालीम का अमली पहलू है जिसका हमसे इज़हार होना चाहिए अन्यथा दूसरे मज़ाहिब की तरह हमारा ईमान का दावा सिर्फ दावा होगा। अब यहां फ़रमाया कि यह किताब इस्लाह करती है दूसरी किताबें नहीं करतीं। उनमें क्योंकि उनकी तालीम कामिल नहीं है। इसलिए नहीं करतीं। और

अगर हम क़ुरआन-ए-करीम को मानते हैं और फिर इस्लाह नहीं होती तो इस में हमारा क़सूर है क्योंकि जैसा कि आप ने फ़रमाया कामिल पैरवी ज़रूरी है। कामिल पैरवी अगर नहीं करेंगे तो किस तरह इस्लाह होगी। इस पर अमल नहीं करेंगे तो किस तरह इस्लाह होगी। अतः हमें कोशिश करनी चाहिए कि हम कामिल पैरवी करने वाले हों। अल्लाह तआला इसकी तौफीक दे।

फिर आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "..हमारा मुशाहिदा और तजुर्बा और उन सब का जो हमसे पहले गुज़र चुके हैं इस बात का गवाह है कि क़ुरआन शरीफ़ अपनी रुहानी ख़ासीयत और अपनी ज़ाती रोशनी से अपने सच्चे पैरौ को अपनी तरफ़ खींचता है और इस के दिल को मुनव्वर करता है और फिर बड़े बड़े निशान दिखला कर ख़ुदा से ऐसे ताल्लुक़ात मुस्तहकम बख़श देता है कि वह ऐसी तलवार से भी टूट नहीं सकते जो टुकड़ा टुकड़ा करना चाहती है। वह दिल की आँख खौलता है और गुनाह के गंदे चशमा को बंद करता है और ख़ुदा के लज़ीज़ मुकालमा मुख़ातबा से शरफ़ बख़्शता है और उलूम-ए-ग़ैब अता फ़रमाता है और दुआ क़बूल करने पर अपने कलाम से सूचना देता है और प्रत्येक जो इस शख़्स से मुक़ाबला करे जो क़ुरआन शरीफ़ का सच्चा पैरौ है ख़ुदा अपने हैबतनाक निशानों के साथ इस पर ज़ाहिर कर देता है कि वह इस बंदा के साथ है जो उस के कलाम की पैरवी करता है।"

(चशमा मार्फ़त, रुहानी ख़ज़ायन भाग 23 पृष्ठ 305 से 309)

तो सच्चा पैरौ होना बुनियादी शर्त है फिर इस बात को वर्णन फ़रमाते हुए कि क़ु-रआन-ए-करीम शिर्क से निजात ज़रीया है

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "जो कुछ क़ुरआन शरीफ़ ने तौहीद का बीज बिलाद अरब, फ़ारस, मिस्र, शाम, हिंद, चीन, अफ़ग़ानिस्तान, कश्मीर इत्यादि बिलाद में बो दिया है और अक्सर बिलाद से बुत परस्ती और दीगर अक़साम की मख़लूक़ परस्ती का तुख़्म जड़ से उखाड़ दिया है यह एक ऐसी कार्रवाई है कि इस की नज़ीर किसी ज़माना में नहीं पाई जाती।"

(चशमा मार्फ़त, रुहानी ख़ज़ायन भाग 23 पृष्ठ 77)

यह जो इस्लाम शुरू में फैला है और उन मुल्कों में शिर्क ख़त्म हुआ है तो यह क़ुरआन--ए-करीम की तालीम पर अमल करने की वजह से था और इसी लिए हमारे आबाओ अज्दाद ने इस्लाम क़बूल किया लेकिन अगर हम इस पर अमल नहीं कर रहे तो फिर हम वापस उसी जहालत में जा रहे हैं। क़ुरआन-ए-करीम की तालीम आला दर्जा की तालीम है। इस के बारे में आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"जो किताब इब्तदाए आफ़रीनश के वक़्त आई होगी उसकी निसबत अक़ल क़तई तौर पर तजवीज़ करती है कि वह कामिल किताब नहीं होगी।" जो किताबें शुरू में आई हैं अक़ल तस्लीम करती है कि वह कामिल नहीं हो सकतीं " बल्कि वह केवल इस उस्ताद की तरह होगी जो अक्षर पढ़ने वाला बच्चों को तालीम देता है।"बच्चों को अलिफ़ बे पे सिखाता है ।"साफ़ ज़ाहिर है कि ऐसी इबतेदाई तालीम में बहुत लियाक़त की ज़रूरत नहीं होती। "प्राइमरी तालीम बच्चों को देनी है, A B C सिखानी है, अलिफ़ बे जीम सिखानी है तो बहुत ज़्यादा लियाक़त की ज़रूरत नहीं है। "हाँ जिस ज़माना में इन्सानी तजुर्बा ने तरक़्क़ी की और नीज़ नौ इन्सान कई किस्म की ग़लतियों में पड़ गई तब बारीक तालीम की हाजत पड़ी। बिलख़सूस जब गुमराही की तारीकी दुनिया में फैल गई और इन्सानी नफ़ूस कई किस्म की इलमी और अमली ज़लालत में मुबतला हो गए तब एक आला और अकमल तालीम की हाजत पड़ी और वह क़ुरआन शरीफ़ है। लेकिन इब्तदाए ज़माना की किताब के लिए आला दर्जा की तालीम की ज़रूरत न थी क्योंकि अभी इन्सानी नफ़ूस सादा थे और हनूज़ उनमें कोई ज़ुल्मत और ज़लालत जागज़ीं नहीं हुई थी। हाँ इस किताब के लिए आला तालीम की ज़रूरत थी जो इंतेहाई दर्जा की ज़लालत के वक़्त ज़ाहिर हुई और उन लोगों की इस्लाह के लिए आई जिनके दिलों में अक़ायद फ़ासदा रासिख़ हो चुके थे और आमाल-ए-क़बीहा एक आदत के हुक्म में हो गए थे।"

(चशमा मार्फ़त, रुहानी ख़ज़ायन भाग 23 पृष्ठ 70 हाशिया)

क़ुरआन शरीफ़ की तालीम उस वक़्त आई जब इन्सान दिमाग़ mature हो गया था, समझने लग गया था। बुराईयां भी इंतेहा को पहुंच गई थीं और इन्सान उनमें डूब रहा था। इस वक़्त उसके दिमाग़ के मुताबिक़ तालीम आ गई। फिर क़ुरआन-ए-करीम के आलमगीर किताब होने बारे में फ़रमाया कि याद रखो कि "यह बात वास्तव में सही और दरुस्त है कि संसार के आरंभ में भी एक इल्हामी किताब नौ इन्सान को मिली थी।" फिर फ़रमाया कि "..इस जगह अगर कोई यह सवाल करे कि इब्तदाए ज़माना में सिर्फ एक इल्हामी किताब इन्सानों को क्यों दी गई? हर एक क़ौम के लिए जुदा--जुदा किताबें क्यों न दी गईं? इस का जवाब यह है कि इब्तदाए ज़माना में इन्सान थोड़े थे और इस संख्या से भी कमतर थे जो उन को एक क़ौम कहा जाए। इस लिए उनके लिए सिर्फ एक किताब काफ़ी थी। फिर बाद इस के जब दुनिया में इन्सान फैल गए और हर एक हिस्सा ज़मीन के बाशिंदों का एक क़ौम बन गई और बबायस दूर दराज़ मसाफ़तों के एक क़ौम दूसरी क़ौम के हालात से बिलकुल बे-ख़बर हो गई ऐसे ज़मानों में ख़ुदा तआला की हिक्मत और मस्लिहत ने तक़ाज़ा फ़रमाया कि हर एक क़ौम के लिए जुदा जुदा रसूल और इल्हामी किताबें दी जाएं। इसलिए ऐसा ही हुआ। और फिर जब नौ इन्सान ने दुनिया की आबादी में तरक़्क़ी की और मुलाक़ात के लिए राह खुल गई और एक देश के लोगों को दूसरे देश के लोगों के साथ मुलाक़ात करने के लिए सामान मुयस्सर आगए और इस बात का इलम हो गया कि अमुक अमुक हिस्सा ज़मीन पर नौ इन्सान रहते हैं और ख़ुदा तआला का इरादा हुआ कि इन सबको फिर दुबारा एक क़ौम की तरह बना दिया जाए और बाद तफ़र्रुक़ा के फिर उनको जमा किया जाए तब ख़ुदा ने तमाम मुल्कों के लिए एक किताब भेजी और इस किताब में हुक्म फ़रमाया कि जिस जिस ज़माना में यह किताब मुख़्तलिफ़ देशों में पहुंचे उनका फ़र्ज़ होगा कि उनको क़बूल कर लें और इस पर ईमान लावें और वे किताब क़ुरआन शरीफ़ है जो समस्त मुल्कों का बाहमी रिश्ता क़ायम करने के लिए आई है। क़ुरआन से पहली सब किताबें मुख़तस अल-क़ौम कहलाती थीं यानी सिर्फ एक क़ौम

के लिए ही आती थीं। इसलिए शामी, फ़ारसी, हिन्दी, चीनी, मिस्री, रूमी ये सब कौमें थीं जिनके लिए जो किताबें या रसूल आए वह सिर्फ अपनी क़ौम तक महिदूद थे। दूसरी क़ौम से उनको कुछ ताल्लुक़ और वास्ता न था। परंतु सब के बाद क़ुरआन शरीफ़ आया जो एक आलमगीर किताब है और किसी ख़ास क़ौम के लिए नहीं बल्कि तमाम क़ौमों के लिए है। ऐसा ही क़ुरआन शरीफ़ एक ऐसी उम्मत के लिए आया जो आहिस्ता-आहिस्ता एक ही क़ौम बनना चाहती थी। अतः अब ज़माना के लिए ऐसे सामान मयस्सर आ गए हैं जो मुख़्तलिफ़ क़ौमों को वहदत का रंग बख़्शते जाते हैं। बाहमी मुलाक़ात जो असल जड़ एक क़ौम बनने की है ऐसी सहल हो गई है कि बरसों की राह चंद दिनों में तै हो सकती है और पैग़ामरसानी के लिए वे सबीलें पैदा हो गई हैं कि जो एक बरस में भी किसी दूर दराज़ देश की ख़बर नहीं आ सकती थी वह अब एक साअत में आ सकती है। ज़माना में एक ऐसा इन्क़लाब अज़ीम पैदा हो रहा है और तमद्दुनी दरिया की धार ने एक ऐसी तरफ़ रख कर लिया है जिससे सरीह मालूम होता है कि अब ख़ुदा तआला का यही इरादा है कि तमाम क़ौमों को जो दुनिया में फैली हुई हैं एक क़ौम बना दे और हज़ारहा बरसों के बिछड़े हुओं को फिर बाहम मिलादे और यह ख़बर क़ुरआन शरीफ़ में मौजूद है और क़ुरआन शरीफ़ ने ही खुले तौर पर यह दावा किया है कि वह दुनिया की तमाम क़ौमों के लिए आया है जैसा कि अल्लाह तआला क़ुरआन शरीफ़ में फ़रमाता है। يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعًا (अल् ऐराफ़ : 159) अर्थात समस्त लोगों को कह दे कि मैं तुम सब के लिए रसूल हो कर आया हूँ।और फिर फ़रमाता है وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ (अ-ल्अंबिया : 108) अर्थात मैंने तमाम आलिमों के लिए तुझे रहमत करके भेजा है। और फिर फ़रमाता है। لِيَكُوْنَ لِلْعٰلَمِيْنَ نَذِيْرًا (अल् फुरकान : 2) अर्थात हमने इस लिए भेजा है कि तमाम दुनिया को डरावे लेकिन हम बड़े ज़ोर से कहते हैं कि क़ुरआन शरीफ़ से पहले दुनिया की किसी इल्हामी किताब ने यह दावा नहीं किया बल्कि हर एक ने अपनी रिसालत को अपनी क़ौम तक ही महिदूद रखा यहां तक कि जिस नबी को ईसाईयों ने ख़ुदा क़रार दिया उसके मुँह से भी यही निकला कि "मैं इसराईल की भेड़ों के सिवा और किसी की तरफ़ नहीं भेजा गया।" हज़रत-ए-ईसा ने यही कहा था बाइबल में। "और ज़माना के हालात ने भी गवाही दी कि क़ुरआन शरीफ़ का यह दावा तब्लीग़ आम का ठीक अवसर पर है क्योंकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़हूर के वक़्त तब्लीग़ आम का दरवाज़ा खुल गया था।"

(चशमा मार्फ़त, रुहानी ख़ज़ायन भाग 23 पृष्ठ 74 से 77)

फिर यह वर्णन फ़रमाते हुए कि क़ुरआन-ए-करीम की चार वजूहात, अस्बाब हैं। इलल राबेआ यह हैं

आप फ़रमाते हैं : "हर शैय की चार इल्लतें होती हैं "यानी अस्बाब या वजूहात होते हैं "..और वह अलल अर्बा ये होती हैं।" यह कौन सी इलल् अरबा हैं यानी "इल्लत-ए--फ़ायली।" अर्थात उस को करने वाला कौन है और इस की वजूहात। "इल्लत सूरी।" ज़ाहिरी और अमली वजूहात उसकी क्या हैं। "इल्लत-ए-माद्दी।" इस का माद्दी फ़ायदा भी किया है। "इल्लत-ए-ग़ाई।" इस की असल वजह और उन सब चीज़ों की बुनियादी और मजमूई वजह क्या है? "इस मुक़ाम पर कुरान-ए-शरीफ़ की चार इल्लतों का वर्णन किया।" फ़रमाया कि "इल्लत-ए-फ़ाइली तो इस किताब की الٓمّٓ है। और الٓمّٓ के माने मेरे नज़दीक اَنَا اللّٰهُ اَعْلَمُ अर्थात मैं अल्लाह वह हूँ जो सबसे ज़्यादा इलम रखता हूँ।" यानी अल्लाह तआला जानता है इन्सान की पैदाइश का मक़सद किया है "और इल्लत-ए-माद्दी ذٰلِكَ الْكِتٰبُ है अर्थात यह किताब ख़ुदा तआला की तरफ़ से आई है जो सबसे ज़्यादा इलम रखता है।" इस पर अमल कर के इस से बड़े फ़वाइद हासिल किए जा सकते हैं। "और عِلَّتِ صُوْرِی لَا رَيْبَ فِيْهِ है यानी इस किताब की ख़ूबी और कमाल यह है कि इस में किसी किस्म का शक-ओ--शुबा ही नहीं।' ऐसी ख़ूबसूरत तालीम है कि इस का कोई मुक़ाबला ही नहीं है। "जो बात है मुस्तहकम और जो दावा है वह ठोस और रोशन और इल्लत-ए-ग़ाई इस किताब की इस किताब के नुज़ूल की ग़रज़-ओ-ग़ायत यह है कि मुत्तक़ियों को हिदायत करती है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 8 पृष्ठ 306-307 ऐडीशन 1984 ई.)और यही एक हक़ीक़ी किताब का, दीनी किताब का उद्देश्य होना चाहिए।

फिर आप सूरः बकरः की पहली दूसरी और तीसरी आयात का अनुवाद करते हुए फ़रमाते हैं कि"तक़्वा ऐसी आला दर्जा की ज़रूरी शए क़रार दिया गया है कि क़ु-रआन-ए-करीम की इल्लत ग़ाई उसी को ठैहराया है। इसलिए दूसरी सूरत को जब शुरू किया है तो यूं ही फ़रमाया है।الٓمّٓ ۔ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ فِيْهِ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ (अल्बकर : 2-3) मेरा मज़हब यही है कि क़ुरआन-ए-करीम की यह तर्तीब बड़ा मर्तबा रखती है। ख़ुदा तआला ने इस में अलल अर्बा का वर्णन फ़रमाया है।' यानी चार अस्बाब और वजूहात का। "इल्लत-ए-फाइली, माद्दी, सूरी, ग़ाई। हर एक चीज़ के साथ ये चार ही अलल होती हैं। क़ुरआन-ए-करीम निहायत अकमल तौर पर उनको दिखाता है। इल्म। इस में यह इशारा है कि अल्लाह तआला ने जो बहुत जानने वाला है। इस कलाम को हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नाज़िल किया है। अर्थात ख़ुदा उस का फ़ायल है। ذٰلِكَ الْكِتٰبُ यह माद्दा बताया।' यानी क़ुरआन-ए-करीम" या यह कहो कि यह इल्लत माद्दी है।" यानी माद्दी हालत में जो हमारे पास किताब है वह भी एक किताब है जिस पर अमल कर के इन्सान अपने मक़सद को पा सकता है। "' عِلَّتِ صُوْرِی لَا رَيْبَ فِيْهِ हर एक चीज़ में संदेह और ज़नून फ़ासदा पैदा हो सकते हैं परंतु क़ुरआन-ए-करीम ऐसी किताब है कि इस में कोई रीब नहीं है।' कोई संदेह नहीं। 'لَا رَيْبَ इसी के लिए है। अब जबकि अल्लाह तआला ने इस किताब की शान यह बताई कि لَا رَيْبَ فِيْهِ हर एक सलीमुल फ़ितरत और सआदत-मंद इन्सान की रूह उछलेगी और ख़ाहिश करेगी कि इस की हिदायतों पर अमल करे। हम अफ़सोस से कहते हैं कि कुरान-ए-शरीफ़ की उजला और अस्फ़ा शान को दुनिया के सामने पेश नहीं किया जाता अन्यथा क़ुरआन शरीफ़ की खूबियां और इस के कमालात, इस का हुस्न अपने अंदर एक ऐसी कशिश और जज़ब रखता है कि बे-इख़्तियार हो हो कर दिल उस की तरफ़ आएं।

उदाहरणतः अगर एक ख़ुशनुमा बाग़ की तारीफ़ की जाए और इस के ख़ुशबूदार दरख़्तों और दिल को तर-ओ-ताज़ा करने वाली बोटियों और रविशों और मुसफ़्फ़ा पानी की बेहती हुई नद्दियों और नहरों का तज़किरा किया जाए तो हर एक शख़्स दिल से चाहेगा कि इस की सैर करे और इस से आनंद उठावे। और अगर यह भी बताया जावे कि इस में कुछ चश्मे ऐसे जारी हैं जो अमराज़ पुराने और देहांत देने वाले को शिफ़ा देते हैं तो और भी ज़्यादा जोश और तलब के साथ लोग वहां जाऐंगे। इसी तरह पर क़ुरआन शरीफ़ की ख़ूबियों और कमालात को अगर निहायत ही ख़ूबसूरत और मोस्सर अलफ़ाज़ में वर्णन किया जावेतो रूह पूरे जोश के साथ उसकी तरफ़ है और हक़ीक़त में रूह की तसल्ली और सेरी का सामान और वह बात जिससे रूह की हक़ीक़ी एहतियाज पूरी होती है क़ुरआन-ए-करीम ही में है

इस लिए अल्लाह तआला ने फ़रमाया هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ "متقیو कि मुत्तकी के लिए हिदायत है। "और दूसरी जगह कहा لَا يَمَسُّهٗٓ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ।(अल् वकिया : 80) "कोई उसे नहीं छू सकता सिवाए पाक किए हुए लोगों के। फ़रमाया कि "इस से मुराद वही मुत्तक़ीन हैं जो वर्णन हुए हैं। इस से साफ़ तौर पर मालूम हुआ कि क़ुरआन के उलूम के इन्किशाफ़ के लिए तक़्वा शर्त है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 424-425 ऐडीशन 1984 ई.)

लेकिन आजकल के नाम निहाद उल्मा ने जो तक़्वा से आरी हैं इस की तालीम को ऐसे रंग में पेश किया है कि मुख़ालेफ़ीन-ए-इस्लाम को इस की तालीम पर मज़ीद एतराज़ करने का मौक़ा मिल रहा है।

आज ये हम अहमदियों का काम है कि हम अपने अंदर तक़्वा पैदा करते हुए इस तालीम की ख़ूबीयों को अपने क़ौल-ओ-फ़ेअल से कर के अब दिखाएंगे, अमल करके अब दिखाएंगे। दुनिया को बताएं कि क़ुरआन-ए-करीम ही है जो हर किस्म की बीमारियों का ईलाज है और इस को भेजने वाला वह ख़ुदा है जिसने उसे बामक़सद बना कर दुनिया की इस्लाह के लिए भेजा है। अल्लाह तआला हमें तक़्वा पर चलते हुए इस पर अमल करने की तौफ़ीक़ आता फ़रमाए।

बहुत गहरे मज़ामीन हैं। बहुत ग़ौर से सुनने वाले हैं। बहुत ग़ौर से इस पर अमल करने की ज़रूरत है। क़ुरआन-ए-करीम को बड़े ग़ौर से हमें पढ़ना चाहिए।

अब मेंदुआ की तहरीक भी करना चाहता हूँ बंगला देश मैं आजकल जलसा सालाना हो रहा है। आज ही उनका पहला दिन था लेकिन वहां मुख़ालेफ़ीन ने हमला किया। जलसा गाह पर भी हमला किया। कई लोग वहां ज़ख़मी भी हुए। मेरा ख़्याल है बाहर से कुछ इस तरह उन्होंने हमला किया कि कुछ ज़ख़मी हुए हैं। कुछ शदीद ज़ख़मी भी हैं। फिर कुछ लोगों की जो वहां इस इलाक़े में अहमदी थे उनके घरों को भी जला रहे हैं। अभी तक की जो ख़बर आई है ये उस के मुताबिक़ है। और कितना नुक़्सान हुआ है अभी पूरा अंदाज़ा नहीं। अल्लाह तआला अहमदियों को उनके उपद्रव से भी

महफ़ूज़ रखे और उनकी पकड़ के भी सामान करे। अब तो उन के लिए कोई हिदायत की दुआ नहीं हो सकती। اَللّٰھُمَّ مَزِّقْھُمْ کُلَّ مُمَزَّقٍ وَسَحِّقْھُمْ تَسْحِیْقًا वाली दुआ ही है जो उनके लिए हमारे मुँह से निकलती है, दिल से है।

इसी तरह पाकिस्तान के हालात के लिए भी दुआ करें अल्लाह तआला वहां भी अहमदियों के हालात ठीक रखे बुर्कीना फासो में भी ख़तरात अभी मंडला रहे हैं वहां के लिए दुआ करें इसी तरह अल-जज़ायर में भी अहमदियों पर कुछ मुक़द्दमात हैं। उनके लिए भी दुआ करें। अल्लाह तआला हर जगह अहमदियों को महफ़ूज़ रखे। बंगला देश में जैसा कि मैंने कहा इंतेज़ामीया ने हमें यही कहा था कि फ़िक्र न करो। जलसा करो और हम पूरी हिफ़ाज़त करेंगे लेकिन जब बुलवाया और दहश्तगर्द, शिद्दत-पसंद मुल्ला अपने टुल्ला को ले के आए हैं तो पुलिस वहां तमाशाई बन के बैठी हुई है और कोई अक़्दाम नहीं कर रही। बहरहाल हमें अल्लाह तआला की तरफ़ झुकना चाहिए, अल्लाह तआला से दुआ मांगनी चाहिए। अल्लाह तआला हमारे उन भाईयों की मुश्किलात को जल्द दूर फ़रमाए।

(रोज़नामा अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल 24 मार्च 2023 पृष्ठ 2 से 7)

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-करीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुतबात जुमा और खिताबात, अध्याम्त्पूर्ण संदेश, ख़ुतबा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इलम के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर अमल करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की तालीम-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी तालीम-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इस का सम्मान किया जाए। इस लिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे।

(संस्थान)

★ ★ ★

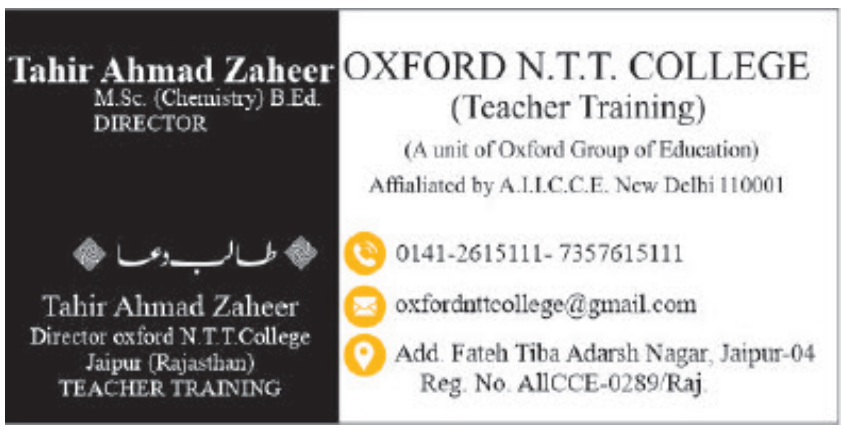

पृष्ठ 2 का शेष

दारुल फ़िकर बेरूत लुबनान, 1996 ई.) अर्थात अगर ग़लतफ़हमी से हो गया तो कोई हर्ज नहीं है। यह भी हो सकता है कि यह आयत आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने समझाने के लिए वैसे पढ़ कर सुनाई हो। ज़रूरी नहीं है कि उस वक़्त नाज़िल हुई हो। बहर हाल यह रिवायत حلیۃ الاولیاء है।

हज़रत आमिर बिन रबिया रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो मुझ पर एक मर्तबा दुरूद भेजता है अल्लाह इस पर दस मर्तबा सलामती भेजता है। अतः अब तुम्हारी मर्ज़ी है कि मुझ पर कम दुरूद भेजो या ज़्यादा दुरूद भेजो। एक दूसरी रिवायत में है कि हज़रत आमिर बिन रबिया रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो कोई बंदा मुझ पर सलामती की दुआ करता है तो जब तक वह इसी हालत में होता है फ़रिश्ते उस पर सलामती की दुआ करते हैं। अतः बंदे के इख़तेयार में है चाहे तो ज़्यादा मर्तबा सलामती की दुआ करे और चाहे तो कम।

(حلیۃ الاولیاء وطبقات الاصفیاء 1 भाग पृष्ठ 180 दारुल फ़िकर बेरूत लुबनान, 1996 ई.)

फिर अगला वर्णन है

हज़रत हराम बिन मिलहान रज़ियल्लाहु अन्हो का।

हज़रत हराम बिन मिलहान रज़ियल्लाहु अन्हो के बारे में आया है, उनकी नसल आगे चली।

(अल् तबकातुल कुबरा भाग 3, पृष्ठ 266 हराम बिन मिलहान रज़ियल्लाहु अन्हो बिन मिलहान दारुल अहया अल् तुर्रास बेरूत)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हो से मर्वी है उन्होंने कहा कि हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो ने मुझ से वर्णन किया कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके मामूं हज़रत हराम बिन मिलहान रज़ियल्लाहु अन्हो को जो उम्मे सुलेम के भाई थे सत्तर सवारों के साथ बनू आमिर की तरफ़ भेजा और आमिर बिन तुफ़ैल मुशरिकों का सरदार था। जिसने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तीन बातों में से एक का इख़तेयार दिया था। उसने कहा था देहाती लोग आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के होंगे और देहाती मेरे या यह कि मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफ़ात के बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का जांनशीन हूँगा अन्यथा मैं दो हज़ार ग़त्फ़ान के आदमियों को लेकर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर हमला कर दूँगा। तो आमिर किसी औरत के घर ताऊन में मुबतला हुआ। कहने लगा यह वैसे ही गिल्टियों की बिमारी है जो आले सलूल की एक औरत के घर में जवान ऊंट को हुई थी। मेरा घोड़ा लाओ। वह उस पर सवार हुआ और अपने घोड़े की पीठ पर ही मर गया। आख़िर यह उस का अंजाम हुआ। इस के बारे में उन्होंने शुरू में वर्णन कर दिया।

फिर रिवायत में इस का भी और इस के क़बीले का भी वर्णन यह मिलता है कि हज़रत उम्मे सलीम रज़ियल्लाहु अन्हा के भाई हज़रत हराम बिन मिलहान रज़ियल्लाहु अन्हो बन मिलहान रज़ियल्लाहु अन्हो, एक लंगड़े आदमी और एक और आदमी को जो अमुक क़बीला से था अपने साथ लेकर बनू आमिर के पास गए। हराम बिन मिलहान रज़ियल्लाहु अन्हो ने इन दोनों से कहा। तुम क़रीब ही रहना। मैं उनके पास जाता हूँ। अगर उन्होंने मुझे अमन दिया तो तुम आ जाना और अगर मुझे क़तल कर दिया तो तुम अपने साथियों के पास जा कर उन्हें बताना। हज़रत हराम बिन मिलहान रज़ियल्लाहु अन्हो ने आमिर के पास जा कर कहा क्या तुम मुझे अमन देते हो कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पैग़ाम पहुंचा दूँ। यह कह कर वह उस से बातें करने लगे। क़बीले के लोगों ने एक शख़्स को इशारा किया वह उनके पीछे से आया और उनको ताक कर नेज़ा मारा जो उनके जिस्म से आर-पार हो गया।

हज़रत हराम बिन मिलहान रज़ियल्लाहु अन्हो ने ज़ख़मों से निकलने वाला ख़ून हाथ में लिया और अपने मुँह पर मिलते हुए कहा اللّٰہُ اَکْبَرُ! فُزْتُ وَرَبِّ الْکَعْبَۃِ۔ अल्लाहु-अकबर! काअबा के रब की क़सम मैंने अपनी मुराद पा ली।

फिर वे लोग दूसरे आदमी के पीछे चले और उसे मार डाला और फिर बाक़ी कारियों पर जा कर हमला कर दिया और वे सारे के सारे मारे गए सिवाए उस लंगड़े आदमी के जो पहाड़ की चोटी पर चला गया था। अल्लाह ने हम पर वे बात नाज़िल की। फिर उसका वर्णन अज़कार मौक़ूफ़ हो गया यानी हमारी तरफ़ से हमारी क़ौम को कह दो कि हम अपने रब से जा मिले हैं। वे हमसे ख़ुश हुआ और हमें ख़ुश कर दिया। तब नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तीस दिन हर सुबह उनके ख़िलाफ़ यानी

रेअल, ज़कवान, बनूलहयान और उसय्या के ख़िलाफ़ दुआ करते रहे जिन्हों ने अल्लाह और उस के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बग़ावत की थी। यह बुख़ारी की रिवायत है।

(सही बुख़ारी किताब अलमग़ाज़ी बाब غزوۃالرجیع ورِعْل وذَکْوَان... हदीस 4091)

बुख़ारी की एक और रिवायत जो हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो से है इस के मुताबिक़ नेज़े के बजाय उनको बरछा मारा गया था।

(सही बुख़ारी किताब अल्-जिहाद बाब من ینکب أویطعن فی سبیل اللہ हदीस 2801)

एक और रिवायत के मुताबिक़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक माह तक सुबह की नमाज़ में इन यानी बनी सुलेम के दो क़बीलों रेल और ज़कवान के ख़िलाफ़ दुआ करते रहे।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि यह क़नूत की इबतेदा थी। इस से क़बल हम क़नूत नहीं किया करते थे।

(सही बुख़ारी किताब मग़ाज़ी बाब الرجیع ورِعْل وذَکْوَان... हदीस 4088)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु हुफ़्फ़ाज़ की शहादत के वाक़े को वर्णन फ़रमाते हुए सहाबा की क़ुर्बानियों के जज़बा के हवाले से फ़रमाते हैं कि "हमें तारीख़ पढ़ने से मालूम होता है कि सहाबा जंगों में इस तरह जाते थे कि उनको यूं मालूम होता था कि जंग में शहीद होना उनके लिए ऐन राहत और ख़ुशी का मूजिब है और अगर उनको लड़ाई में कोई दुख पहुंचता था तो वे इस को दुख नहीं समझते थे बल्कि सुख ख़्याल करते थे। इसलिए सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु के कसरत के साथ इस किस्म के वाक़ियात तारीख़ों में मिलते हैं कि उन्होंने ख़ुदा की राह में मारे जाने को ही अपने लिए ऐन राहत महसूस किया। मसलन वे हुफ़्फ़ाज़ जो रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वस्त-ए-अरब के एक क़बीला की तरफ़ तब्लीग़ के लिए भेजे थे उनमें से हराम बिन मिलहान रज़ियल्लाहु अन्हो बिन मिलहान इस्लाम का पैग़ाम लेकर कबील-ए-आमिर के रईस आमिर बिन तुफ़ैल के पास गए और बाक़ी सहाबा रज़ि-यल्लाहु अन्हु पीछे रहे। शुरू में तो आमिर बिन तुफ़ैल और इस के साथियों ने मुना-फ़िक़ाना तौर पर उनकी आओ-भगत की लेकिन जब वह मुतमइन हो कर बैठ गए और तब्लीग़ करने लगे तो उनमें से कुछ शरीरों ने एक ख़बीस को इशारा किया और उसने इशारा पाते ही हराम बिन मिलहान रज़ियल्लाहु अन्हो बिन मिलहान पर पीछे से नेज़ा का वार किया और वह गिर गए, गिरते वक़्त उनकी ज़बान से बेसाख़ता निकला कि اَللّٰہُ اَکْبَرُ فُزْتُ وَرَبِّ الْکَعْبَۃِ। अर्थात मुझे काबा के रब क़सम! मैं निजात पा गया। फिर इन शरीरों ने बाक़ी सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु का मुहासरा किया और उन पर हमला-आवर हो गए। इस अवसर पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के आज़ाद करदा ग़ुलाम आमिर बिन फ़ुहैरा रज़ियल्लाहु अन्हो जो हिज्रत के सफ़र में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ थे उनके मुताल्लिक़ वर्णन आता है बल्कि ख़ुद उनका क़ातिल जो बाद में मुस्लमान हो गया था वह अपने मुस्ल-मान होने की वजह ही यह वर्णन करता था कि जब मैंने आमिर बिन फ़ुहैरा रज़ियल्लाहु अन्हो को शहीद किया तो उनके मुँह से बेसाख़ता निकला فُزْتُ وَاللّٰہِ। अर्थात ख़ुदा की क़सम! मैं तो अपनी मुराद को पहुंच गया हूँ। ये वाक़ियात बताते हैं कि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए मौत बजाय रंज के ख़ुशी का मूजिब होती थी।"

(एक आयत की पुर मारुफ़ तफ़सीर, अनवार उलूम भाग 18 पृष्ठ 612-613)

फिर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि नजद के कुछ लोग आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए। उसे मैं छोड़ता हूँ। और इस ज़िमन में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु का हवाला पेश कर देता हूँ। यह ज़रा ज़्यादा तफ़सीली है। वह इस वाक़िया की तफ़सील वर्णन करते हुए लिखते हैं कि "एक शख़्स अबू बरा आमरी जो वस्त अरब के क़बीला बनू आमिर का एक रईस था, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में मुलाक़ात के लिए हाज़िर हुआ। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बड़ी नरमी से और शफ़क़त के साथ उसे इस्लाम की तब्लीग़ फ़रमाई और इस ने भी बज़ाहिर शौक़ और तवज्जा के साथ आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तक़रीर को सुना परंतु मुस्लमान नहीं हुआ। जबकि उसने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से यह अर्ज़ किया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मेरे साथ अपने चंद अस्हाब नजद की तरफ़ रवाना फ़रमाएं जो वहां जा कर अहल-ए-नजद में इस्लाम की तब्लीग़ करें और मुझे उम्मीद है कि नज्दी लोग आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की दावत को रद नहीं करेंगे। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाया: मुझे तो अहल-ए-नजद पर एतेमाद नहीं है। अबू बरा ने कहा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हरगिज़ फ़िक्र न करें। मैं उनकी हिफ़ाज़त का ज़ामिन होता हूँ। चूँकि अबू बरा एक क़बीला का रईस और साहब-ए-असर आदमी था आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस को इतमेनान दिलाने पर यक़ीन कर लिया और सहाबा की एक जमात नजद की तरफ़ रवाना कर दी।

यह तारीख़ की रिवायत है। बुख़ारी में आता है कि क़बायल रेला वरज़कवानों (رِعْلاور ذَکْوَانو) (जो मशहूर क़बीला बनू सुलेम की शाख़ थे) उनके चंद लोग आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और इस्लाम का इज़हार कर के दरख़ास्त की कि हमारी क़ौम में से जो लोग इस्लाम के दुश्मन हैं उनके ख़िलाफ़ हमारी इमदाद के लिए (यह तशरीह नहीं की कि किस किस्म की इमदाद, या तब्लीग़ी या फ़ौजी) चंद आदमी रवाना किए जाएं। जिस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह दस्ता रवाना फ़रमाया। इन दोनों रिवायतों की मुताबिक़त की यह सूरत हो सकती है कि रेला वरज़कवानों के लोगों के साथ अबू बरा आमिरी रईस क़बीला आमिर भी आया हो और उसने उनकी तरफ़ से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ बात की हो। इसलिए तारीख़ी रिवायत के मुताबिक़ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह फ़रमाना कि मुझे अहल-ए-नजद की तरफ़ से इतमेनान नहीं है और फिर उसका यह जवाब देना कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम कोई फ़िक्र न करें। मैं इस का ज़ामिन होता हूँ कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सहाबा को कोई तकलीफ़ नहीं पहुँचेगी इस बात की तरफ़ इशारा करता है कि अबू बरा के साथ वरज़कवानों के लोग भी आए थे जिनकी वजह से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़िक्रमंद थे। अल्लाह उचित जानता है। बहरहाल आँ-हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सफ़र 4 हिज्री में मुंज़िर बिन अम्र अंसारी की इमारत में सहाबा की एक पार्टी रवाना फ़रमाई। ये लोग उमूमन अंसार में से थे और तादाद में सत्तर थे और क़रीबन सारे के सारे क़ारी यानी क़ुरआन पढ़ने वाले थे जो दिन के वक़्त जंगल से लकड़ियाँ जमा करके उनकी क़ीमत पर अपना पेट पालते और रात का बहुत सा हिस्सा इबादत में गुज़ार देते थे। जब ये लोग इस मुक़ाम पर पहुंचे जो एक कुँवें की वजह से बैरे मऊन के नाम से मशहूर था तो उन में से एक शख़्स हिराम बिन मिलहान रज़ियल्लाहु अन्हो जो अंस बिन मालिक के मामूं थे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ से दावत-ए-इस्लाम का पैग़ाम लेकर क़बीला आमिर के रईस और अबू बरा -आमेरी के भतीजे आमिर बिन तुफ़ैल के पास आगे गए और बाक़ी सहाबा पीछे रहे। जब हिराम बिन मिलहान रज़ियल्लाहु अन्हो आँ-हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के एलची के तौर पर आमिर बिन तुफ़ैल और उसके साथियों के पास पहुंचे तो उन्होंने शुरू में तो मुनाफ़िक़ाना तौर पर आओ-भगत की लेकिन जब वे मुतमइन हो कर बैठ गए और इस्लाम की तब्लीग़ करने लगे तो उन मे से कुछ शरीरों ने किसी आदमी को इशारा कर के इस बेगुनाह एलची को पीछे की तरफ़ से नेज़ा का वार कर के वहीं ढेर कर दिया। इस वक़्त हराम बिन मिलहान रज़ियल्लाहु अन्हो की ज़बान पर यह शब्द थे। اَللّٰہُ اَکْبَرُ! فُزْتُ وَرَبِّ الْکَعْبَۃِ।यानी "अल्लाहु-अकबर! काअबा के रब कि क़सम! मैं तो अपनी मुराद को पहुंच गया।" आमिर बिन तुफ़ैल ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के एलची के क़तल पर ही इकतेफ़ा नहीं की बल्कि उसके बाद अपने क़बीला बनू आमिर के लोगों को उकसाया कि वे मुस्लमानों की बक़ीया जमात पर हमला-आवर हो जाएं परंतु उन्होंने इस बात से इंकार किया और कहा कि हम अबू बरा की ज़िम्मेदारी के होते हुए मुस्ल-मानों पर हमला नहीं करेंगे। इस पर आमिर ने क़बीला सुलेम में से बनू वरज़कवानों उसेहू को (वही जो बुख़ारी की रिवायत के मुताबिक़ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास वफ़द बन कर थे) अपने साथ लिया और सब लोग मुस्लमानों की इस क़लील और बे बस जमात पर हमला आवर हो गए। मुस्लमानों ने जब इन वहशी दरिंदों को अपनी तरफ़ आते देखा तो उनसे कहा कि हमें तुमसे कोई तार्रुज़ नहीं है। हम तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ से एक काम के लिए आए हैं और हम तुमसे लड़ने के लिए नहीं आए। परंतु उन्हों ने एक न सुनी और सब को तलवार के घाट उतार दिया। इन सहाबियों में से जो उस वक़्त वहां मौजूद थे सिर्फ एक शख़्स बच्चा जो पांव से लंगड़ा था और पहाड़ी के ऊपर चढ़ गया हुआ था। इस सहाबी का नाम काब बिन ज़ैद था और कुछ रिवायात से पता लगता है कि कुफ़्फ़ार ने इस पर भी हमला किया था जिस से वह ज़ख़मी हुआ और कुफ़्फ़ार उसे मुर्दा समझ कर छोड़ गए परंतु वास्तव में उस में जान बाक़ी थी और वह बच गया।

सहाबा की इस जमाअत में से दो शख़्स अर्थात अम्र बिन उमय्यह ज़मरी और मुंज़िर बिन मुहम्मद उस वक़्त ऊंटों इत्यादि के चराने के लिए अपनी जमात से अलग हो कर इधर उधर गए हुए थे उन्होंने दूर से अपने डेरा की तरफ़ नज़र डाली तो क्या देखते हैं कि परिंदों के झुण्ड के झुण्ड हवा में उड़ते फिरते हैं। वे उन सहराई इशारों को ख़ूब समझते थे। फ़ौरन ताड़ गए कि कोई लड़ाई हुई है। वापस आए तो ज़ालिम

कुफ़्फ़ार के कशत-ओ-ख़ून का कारनामा आँखों के सामने था। दूर से ही यह नज़ारा देख कर उन्होंने फ़ौरन आपस में मश्वरा किया कि अब हमें क्या करना चाहीए। एक ने कहा कि हमें यहां से फ़ौरन भाग निकलना चाहिए और मदीना में पहुंच कर आँ-हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इत्तिला देनी चाहिए परंतु दूसरे ने इस राय को क़बूल न किया और कहा कि मैं तो इस जगह से भाग कर नहीं जाऊँगा जहां हमारा अमीर मुंज़िर बिन अम्र शहीद हुआ है। इसलिए वे आगे बढ़कर लड़ा और शहीद हुआ और दूसरे को जिसका नाम अम्र बिन उमय्या ज़मरी था कुफ़्फ़ार ने पकड़ कर क़ैद कर लिया और ग़ालिबन उसे भी क़तल कर देते परंतु जब उन्हें मालूम हुआ कि वह क़बीला मुज़रि से है तो आमिर बिन तुफ़ैल ने अरब के दस्तूर के मुताबिक़ उस के माथे के चंद बाल काट कर उसे रिहा कर दिया और कहा कि मेरी माँ ने क़बीला मुज़रि के एक ग़ुलाम के आज़ाद करने की मन्नत मानी हुई है मैं तुझे उस के बदले में छोड़ता हूँ। गोया इन सत्तर सहाबा में सिर्फ दो शख़्स बच्चे। एक यही अम्र बिन उमय्या ज़मरी और दूसरे काब बिन ज़ैद जिसे कुफ़्फ़ार ने मुर्दा समझ कर छोड़ था।

बअरे मऊना के अवसर पर शहीद होने वाले सहाबा में हज़रत अबू बकर रज़िय-ल्लाहु अन्हु के आज़ाद करदा ग़ुलाम और इस्लाम के देरीना फ़िदाई आमिर बिन फ़ुहैरा थे। उन्हें एक शख़्स जब्बार बिन सुलेमान बाद में कतल किया था। जब्बार बाद में मुस्लमान हो गया और वह अपने मुस्लमान होने की वजह यह वर्णन करता था कि जब मैंने आमिर बिन फ़ुहैरा को शहीद किया तो उनके मुँह से बे-इख़्तियार निकला فُزْتُ وَاللّٰہِ। अर्थात "ख़ुदा की क़सम में तो अपनी मुराद को पहुंच गया हूँ।" जब्बार कहते हैं कि

मैं ये शब्द सुनकर मुतअज्जिब हुआ कि मैंने तो इस शख़्स को क़तल किया है और वह यह कह रहा है कि मैं मुराद को पहुंच गया हूँ। यह क्या बात है। इसलिए मैंने बाद में लोगों से इस की वजह पूछी तो मुझे मालूम हुआ कि मुस्लमान लोग ख़ुदा के रस्ते में जान देने को सबसे बड़ी कामयाबी ख़्याल करते हैं और इस बात का मेरी तबीयत पर ऐसा असर हुआ कि आख़िर इसी असर के अधीन में मुस्लमान हो गया।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सहाबा को वाक़िया रजीई और वाक़िया बैरे मऊना की सूचना क़रीबन एक ही वक़्त में मिली और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को इस का सख़्त सदमा हुआ। यहाँ कि रिवायतों में वर्णन हुआ है कि ऐसा सदमा न इस से पहले आप सल्ल-ल्लाहो अलैहि व सल्लम को कभी हुआ था और न बाद में कभी हुआ। वाक़ई क़रीबन अस्सी सहाबियों का उस तरह धोखे के साथ अचानक मारा जाना और सहाबी भी वह जो अक्सर हफ़्ज़-ए-क़ुरआन में से थे और एक ग़रीब बेनफ़्स वर्ग से ताल्लुक़ रखते थे। अरब के वहशयाना रस्मोरिवाज को मद्द-ए-नज़र रखते हुए भी कोई मामूली वाक़िया नहीं था और ख़ुद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए तो यह ख़बर गोया इसी बेटों की वफ़ात की ख़बर के मुतरादिफ़ थी बल्कि इस से भी बढ़ कर क्योंकि एक रुहानी इन्सान के लिए रुहानी रिश्ता यक़ीनन इस से बहुत ज़्यादा अज़ीज़ होता है जितना कि एक दुनियादार शख़्स को दुनियावी रिश्ता अज़ीज़ होता है। अतः आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इन हादिसात का सख़्त सदमा हुआ परंतु इस्लाम में हरसूरत में सब्र का हुक्म है आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह ख़बर सुन कर इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन पढ़ा और फिर ये अलफ़ाज़ फ़रमाते हुए ख़ामोश हो गए कि هٰذَا عَمَلُ اَبِیْ بَرَّاءَ وَقَدْ کُنْتُ لِهٰذَا کَارِهًا مُتَخَوِّفًا अर्थात "यह अबू बरा के काम का समरा है वर्ना मैं तो उन लोगों के भिजवाने को पसंद नहीं करता था और नजद वालों की तरफ़ से डरता था।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम. ए. पृष्ठ 517 से 521)

फिर वर्णन है हज़रत साद बिन ख़ौलह रज़ियल्लाहु अन्हो का। आप रज़ियल्लाहु अन्हु का ताल्लुक़ क़बीला बनू मालिक बिन हसल बिन आमिर बिन लोई से था। कुछ के नज़दीक आप बनू आमिर के हलीफ़ थे। आप फ़ारस वालों में से हैं जो कि यमन में आकर आबाद हुए।

(ओसोदुल गाबा फी मारे फतील सहाबा भाग 2 पृष्ठ 427 प्रकाशित दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2003 ई.)

आमिर बिन साद अपने वालिद साद बिन अबी विक़ास से रिवायत करते हैं कि उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज्जतुल विदा के अवसर पर मेरी इस बीमारी में इयादत फ़रमाई जिसमें मैं मौत के किनारे पर पहुंच गया था। मैंने अर्ज़ क्या हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरी तकलीफ़ जिस हद तक पहुंच चुकी है वह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम देख रहे हैं। मैं मालदार हूँ और मेरा वारिस सिवाए मेरी इकलौती बेटी के कोई नहीं है। क्या में दो तिहाई माल सदक़ा कर दूँ? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया नहीं। वह कहते हैं मैंने अर्ज़ किया क्या मैं इस का नसफ़ सदक़ा कर दूँ? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाया : नहीं। तीसरा हिस्सा कर दो और तीसरा हिस्सा भी बहुत है। फिर फ़रमाया कि :

तुम्हारा अपने वारिसों को अच्छी हालत में छोड़ना उन्हें मुहताज छोड़ने से बेहतर है कि वे लोगों के आगे हाथ फैलाते फिरें और तुम अल्लाह की रज़ा चाहते हुए जो भी ख़र्च करोगे तुम्हें उस का अज्र दिया जाएगा यहां तक कि एक लुक़मा भी जो तुम अपनी बीवी के मुँह में डालो उस का भी अज्र है।

वह कहते हैं मैंने अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह! क्या मैं अपने साथियों से पीछे छोड़ा जाऊँगा? यहां फ़ौत हो जाऊँगा मैं? आपने फ़रमाया तुम पीछे छोड़े न जाओगे परंतु जो नेक अमल करोगे जिसके ज़रीया तुम अल्लाह की रज़ा चाहो तो तुम उसके ज़रीया दर्जा और रिफ़अत में ज़्यादा होगे और बईद नहीं कि तुम पीछे छोड़े जाओ। अर्थात लंबी उम्र दिए जाओगे यहां तक कि कौमें तुझ से फ़ायदा उठाएं और कुछ दूसरी नुक़्सान भी उठाएं। फिर फ़रमाया कि हे अल्लाह मेरे अस्हाब की हिज्रत पूरी फ़र्मा और उन्हें उनकी एडियों के बल न लौटाना। लेकिन बेचारा साद बिन खोला। रावी कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके लिए दुख का इज़हार फ़रमाया क्योंकि वह हिज्रत के बाद मक्के में फ़ौत हो गए थे। एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम साद बिन खोला के लिए अफ़सोस करते थे कि वह मक्के में मर गए। यह इसलिए कि जिसने मक्के से हिज्रत की इस के लिए रसू-लुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नापसंद करते थे कि वह वहां वापिस आए या इस में हज और उमरा अदा करने से ज़्यादा क़ियाम करे।

(सही मुस्लिम किताब الوصیۃ باب الوصیۃ بالثلث हदीस 4209)

(अल् तबकातुल कुबरा जुज़-ए-3 पृष्ठ 312 साद बिन खोला रज़ियल्लाहु अन्हो प्रकाशित दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत1990-ए-

इस्माईल बिन मुहम्मद बिन साद से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने साइब बिन अमीर अलकारी को हुक्म फ़रमाया कि अगर साद बिन खोला मक्का में वफ़ात पा जाएं तो उन्हें मक्के में दफ़न ना किया जाये

(अलासाबा जलद3 पृष्ठ 21 प्रकाशित दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत1995-ए-

और एक रिवायत के मुताबिक़ हज़रत साद बिन अबी वक्कास रज़ियल्लाहु अन्हु के मुताल्लिक़ हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अगर ये मक्के में वफ़ात पा जाएं तो उन्हें मक्के में दफ़न ना किया जाये

(सब्बलुल हुदा वल इरशाद भाग 8 पृष्ठ 485 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.)

हज़रत साद बिन खोला रज़ियल्लाहु अन्हो जब हज्जतुल विदा के मौक़ा पर फ़ौत हुए तो उनकी पत्नी गर्भवती थीं। उनकी वफ़ात पर ज़्यादा देर नहीं हुई थी कि उनका गर्भा प्रकट हो गया। बच्चे की पैदाइश होने वाली थी। वफ़ात से कुछ अरसा के बाद बच्चे की पैदाइश हो गई। रिवायात में आता है कि पच्चीस रातों या इस से भी कम वक़्त के बाद वज़ा हमल हो गया। जब वह निफ़ास से फ़ारिग़ हुईं तो उन्होंने निकाह का पैग़ाम देने वालों के लिए शीनगार किया। उनके पास अबू सनाबिल बिन बलकूज के एक शख़्स थे आए। बलका ने उनसे कहा कि क्या बात है मैं तुम्हें बना संवरा देखता हूँ। शायद तुम्हारा इरादा निकाह करने का है। अल्लाह की क़सम! तुम निकाह नहीं कर सकती जब तक तुम पर चार माह दस दिन न गुज़र जाएं। सुबीहा कहती हैं जब उसने मुझ से यह कहा तो मैंने शाम के वक़्त कपड़े पहने और मैं रसूलुल्लाह सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आई और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से इस बारे में पूछा। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मुझे फ़तवा दिया कि जब मैंने वज़ा हमल किया तो हलाल हो गई और मुझे इरशाद फ़रमाया कि अगर मैं चाहूँ तो शादी कर सकती हूँ।

(सही मुस्लिम किताब الطلاق باب انقضاء عدۃ المتوفی عنہا..... हदीस 3722)

(इस्तेआब भाग 4 पृष्ठ 1859 प्रकाशन दारुल जलील बेरूत 1992 ई.)

कुछ मसायल का भी उनसे पता लग जाता है। फिर हज़रत अबुल हैशम बिन तैहान हैं। उनका वर्णन यह है कि उनके भाई का नाम हज़रत उबैद बिन उबैद या हज़रत अतीक़ बिन तेहान था। जो ग़ज़व-ए-अहद में शहीद हुए थे।

(अल् तबकातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 341 से 343 प्रकाशित दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1990 ई.)

एक रिवायत में आता है हज़रत हैशम रज़ियल्लाहु अन्हो ने रसूलुल्लाह सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम से अर्ज़ की कि मैं सबसे पहले बैअत करने वाला हूँ। हम किस तरह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बैअत करें तो आप सल्लल्लाहो अलैहि

वसल्लम ने फ़रमाया :

मेरी इस बात पर बैअत करो जिस पर बनीइसराईल ने मूसा की बैअत की।

(معرفۃالصحابۃلابی نعیم भाग 4 पृष्ठ 196 प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू हशशाम रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उसैद बिन हुज़ैर रज़ियल्लाहु अन्हो को क़बीला बनी अब्दुल शहर पर नक़ीब मुक़र्रर फ़रमाया था।

(अल् असाबा फ़ी तमीईज़ सहाबा भाग 7 पृष्ठ 365 प्रकाशित दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1995 ई.)

आप रज़ियल्लाहु अन्हु जंग में दो तलवारें लटकाया करते थे इस वजह से आप रज़ियल्लाहु अन्हु को ज़ू सिफ़्फ़ीन भी कहा जाता है।

(अल् इसतेयाब भाग 2 पृष्ठ 477 दारुल जलील बेरूत 1992 ई.)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने लिखा है कि "जंग-ए--सिफ़्फ़ीन में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो की तरफ़ से हो कर लड़े और शहादत पाई।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए. पृष्ठ 230)

फिर वर्णन है हज़रत आसिम बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु का। हज़रत आसिम रज़ियल्लाहु अन्हु के एक बेटे मुहम्मद थे जो कि हिंद बिंत-ए-मालिक के पैट से थे।

(अल् तबकातुल कुबरा लेइब्ने साद भाग 3 पृष्ठ 352 आसिम बिन साबित, दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1990 ई.)

जंग-ए-अहद में जो लोग आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़रीब थे उनके बारे में एक आयत की तशरीह में हज़रत ख़लीफ़ा राबे र. ने भी वर्णन किया है कि हज़रत इमाम राज़ी चौदह आदमियों के मुताल्लिक़ क़तई शहादत पेश करते हैं कि नाम बनाम वे लोग मौजूद थे और उन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का साथ किसी हालत में नहीं छोड़ा। उनके नामों में जो नाम दर्ज हैं उनमें मुहाजेरीन में से हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु, अली रज़ियल्लाहु अन्हो .. शीया यही कहते हैं सिर्फ हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो थे लेकिन हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत अबदुर्रहमान बिन ओफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत साद बिन अबी वक्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत तलहा बिन ऊबेदुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत अबू उबैदा बिन अल् जराह रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ियल्लाहु अन्हो थे। अंसार में से खब्बाब बिन मुनज़ीर रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत अबू दुज्जान रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत आसिम बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत हारिस बिन सिम्मह रज़ियल्लाहु अन्हो, हैं शायद हज़रत सहल बिन हुनेफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो और इसी तरह उसैद बिन हुज़ैर रज़ियल्लाहु अन्हो भी। हज़रत साद बिन माज़ रज़ियल्लाहु अन्हो वग़ैरा भी थे। यह भी वर्णन आता है कि आठ वे थे जिन्हों ने मौत पर क़सम खाई थी। तीन मुहाजेरीन में से थे और पाँच अंसार में से थे और यह अजीब बात है कि इस वक़्त चूँकि अल्लाह तआला को अपने ख़ुद्दाम की ज़रूरत थी इस लिए आठ के आठ जिन्हों ने मौत पर क़सम खाई थी उनमें से एक भी शहीद नहीं हुआ। यह अल्लाह तआला की उनकी ग़ैरमामूली तौर पर हिफ़ाज़त का दृश्य था।

(उद्धृत दरसुल क़ुरआन हज़रत ख़लीफ़तुल -मसीह राबे 20 फ़रवरी 1994 ई. ज़ेर आयत انما استزلھم الشیطان)

फिर अगला वर्णन है

हज़रत सहल बिन हुनैफ़ अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु का। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो से मर्वी है कि जंग बदर के अवसर पर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हमराह एक सौ ऊंट और ऊंटनियां और दो घोड़े थे उनमें से एक पर हज़रत मिक़दाद बिन उसैद रज़ियल्लाहु अन्हो सवार थे और दूसरे पर हज़रत मसअब बिन उमेर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत सहल बिन हुनेफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो थे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा के रास्ते में इन ऊंटनियों पर बारी बारी सवार होते थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत मरसद बिन अबी मरसद ग़वी रज़ियल्लाहु अन्हो जो हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुतलिब रज़ियल्लाहु अन्हो के हलीफ़ थे ये सब बारी बारी एक ऊंट पर सवार होते थे।

(معجم الاوسط للطبرانی جزء5- पृष्ठ 324 हदीस 5438 दारुल हरमेन बेरूत 1995 ई.)

अहद में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़रीब रहने वालों में हज़रत सहल बिन हुनेफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो का भी वर्णन मिलता है।

युसेर बिन अम्र से मर्वी है कि एक मर्तबा मैं हज़रत सहल बिन हुनेफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और उनसे अर्ज़ किया कि मुझे कोई ऐसी हदीस सुनाई जाए जो फ़िर्क़ा हरूरिया अर्थात ख़ारिजी के मुताल्लिक़ आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुनी हो। उन्होंने फ़रमाया कि मैं तुमसे सिर्फ इतना वर्णन करता हूँ कि जो मैंने सुना है इस से ज़्यादा कुछ नहीं करूँगा। मैंने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को एक क़ौम का वर्णन करते हुए सुना है जो यहां से निकलेगी और उन्होंने इराक़ की तरफ़ इशारा किया। वे लोग क़ुरआन तो पढ़ते होंगे लेकिन वे उनके गले से नीचे नहीं उतरेगा। वे लोग दीन से इस तरह निकल जाऐंगे जैसे तीर शिकार से निकल जाता है। रावी कहते हैं मैंने उस से पूछा कि क्या नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनकी कोई अलामत भी वर्णन फ़रमाई है। तो उन्होंने जवाब दिया मैंने जो सुना था वह यही है। मैंने इस से ज़्यादा तुम्हें कुछ नहीं बता सकता। (मस्नद अहमद भाग 25 पृष्ठ 351 हदीस सहल् बिन हुनेफ़ रिवायत 15977 मोअससा रिसाला बेरूत) जो बात सुनी थी वह बता दी अब ख़ुद अंदाज़ा लगा लो।

अमीर बिन सईद से मर्वी है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत सहल् बिन हुनेफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो की नमाज़ जनाज़ा पढ़ी और इस पर पाँच तक्बीरें कहीं। लोगों ने कहा कि ये कैसी तकबीर है? हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि यह सहल् बिन हुनीफ़ हैं जो बदर में से हैं बदर मे शामिल होने वालों वालों को बदर में न शामिल होने वालों पर फ़ज़ीलत है।

मैंने चाहा कि तुम्हें उनकी फ़ज़ीलत से आगाह कर दूं। (अलकुबरा भाग 3 पृष्ठ 360 و من بنی حنش بن عوف...سَهْلِ بن حُنَيف، دار الكتب العلمية हुनीफ़, दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1990 ई.) ज़ायद तक्बीरें पढ़ के फिर हज़रत जब्बार बिन सख़्र रज़ियल्लाहु अन्हो का वर्णन है। सरिया हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो बतरफ़ बनू तबीह रबीउल आखिर नौ हिज्री में हुआ था, इस के हवाले से लिखा है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो को डेढ़ सौ अफ़राद के हमराह बनू तबीह के अमुक बुत को गिराने के लिए रवाना फ़रमाया। बनू तबीह का इलाक़ा मदीना के शुमाल मशरिक़ में वाक़्य था। आपने इस जंग के लिए हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो को एक काले रंग का बड़ा झंडा दिया और सफ़ैद रंग का छोटा पर्चम अता फ़रमाया। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो सुबह के वक़्त ऑल-ए-हातिम पर हमला-आवर हुए और उनके अमुक बुत को नष्ट कर दिया। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो बनू तबीह से बहुत सारा माल-ए-ग़नीमत और क़ैदी लेकर मदीना आए।

(अल् तबकातुल कुबरा भाग 2 पृष्ठ 124 सरिया अली बिन अबी तालिब अली سریہ علی بن ابی طالب الی الفلس صنم طیّء لیھدمہ، दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1990 ई.)

(موسوعة كشاف اصطلاحات الفنون والعلوم جلد 1 صفحه 19 مكتبة لبنان ناشرون بيروت۔ از مكتبة الشاملة)

इस युद्ध में झण्डा हज़रत जब्बार बिन सख़्र रज़ियल्लाहु अन्हो के पास था। इस सरीये में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने साथियों से राय मांगी तो हज़रत जब्बार बिन सख़्र रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि रात हम अपनी सवारियों पर सफ़र करते हुए गुज़ारें और सुबह होते ही उन पर हमला कर दें। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो को आपकी यह बात पसंद आई।

(तारीख़ दमिशक़ अल-कबीर भाग 73 पृष्ठ 146 सफ़ाना बिंत हातिम ताई। दार अहया अल्लतुर्रास अरबी, बेरूत 2001 ई.)

(इमता उल अस्मा भाग 2 पृष्ठ 45-46 प्रकाशित दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1999 ई.)

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाएं जानिब खड़ा हुआ था तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे पकड़ के अपने दाएं जानिब खड़ा कर दिया। फिर हज़रत जब्बार बिन सक्खर रज़ियल्लाहु अन्हो आए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हम दोनों को अपने पीछे खड़ा दिया।

(الاستیعاب فی معرفۃ الأصحاب भाग 2 पृष्ठ 302 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2010 ई.)

एक रिवायत में है कि हज़रत अमीर बिन अबी वक्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु को अम्र बिन अबदूद ने शहीद किया था।

(अल् तबकातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 110-111 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1990 ई.)

एक दूसरी रिवायत के मुताबिक़ हज़रत अमीर बिन अबी वक्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हो वक्क़ास बिन सईद ने शहीद किया था

(अल्बदायह वाल्नहाया भाग 5 पृष्ठ 252 मतबूआ दारुल हिज्र बेरूत 1997 ई.)

हाँ यह वर्णन जो हो गया हज़रत अमीर बिन अबी वक्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु का

वर्णन है। सख़्र का तो ख़त्म हो गया था। उनके बारे में यह रिवायत है जो रह गई थी कि उनको अम्र बिन अबदूद ने शहीद किया और दूसरी रिवायत में है कि हज़रत अमीर बिन अबी वक्कास रज़ियल्लाहु अन्हो वक्कास बिन सईद ने शहीद किया था।

फिर हज़रत कुत्बा् हैं। एक रिवायत यह है कि सिफ़र 9 हिज्री में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन को बीस आदमियों के हमराह क़बीला ख़सर की एक शाख़ की तरफ़ भेजा जो तबालह के नवाह में थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन्हें हुक्म दिया कि वे एक दम से उन पर हमला करें। ये अस्हाब दस ऊंटों पर सवार हो कर रवाना हुए जिन्हें बारी बारी प्रयोग करते थे। उन्होंने एक आदमी को पकड़ कर उस से पूछगिछ की तो वे उनके सामने गूँगा बन गया और फिर मौक़ा पा कर चीख़ चीख़ कर अपने क़बीला वालों को मुतनब्बा करने लगा। इस पर उन्होंने इस को क़तल कर दिया। फिर हज़रत कुत्बा और आप रज़ियल्लाहु अन्हु के साथियों ने इंतेज़ार किया और जब वे लोग, क़बीला वाले सो गए तो उन पर भरपूर हमला किया। शदीद लड़ाई हुई। दोनों फ़रीक़ों में से कई अफ़राद ज़ख़मी हो गए। हज़रत क़तबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने कई लोगों को क़तल किया। फिर उनके चौपाए, बकरियां और औरतें मदीना ले आए। ख़ुमस् निकालने के बाद सभी के हिस्सा में चार चार ऊंट आए और तब एक ऊंट दस बकरियों के बराबर था।

(अल्तबकातुल कुबरा भाग 2 पृष्ठ 122-123 प्रकाशित दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1990 ई.)

इमाम बगवई कहते हैं कि हज़रत कुत्बा् बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु से कोई हदीस मर्वी नहीं है।

(मोअज्जमुल सहाबा लिल्बग़वी भाग 5 पृष्ठ 66 मकतब दारुल ब्यान कुवैत)

बहरहाल सहाबा का यह वर्णन जो मैं करना चाहता था वह यहां ख़त्म हुआ।

इस के साथ ही मैं एक तो यह है कि पाकिस्तान के अहमदियों के लिए दुआ के लिए कहना चाहता हूँ। दुआ करें अल्लाह तआला उन पर जो सख़्त हालात हैं वहां आसानियां पैदा करे और इन्साफ़ करने वालों, क़ानून नाफ़िज़ करने वालों और ख़ुदा और उस के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नाम पर ज़ुलम करने वालों को अल्लाह तआला अक़्ल दे या उन पर पकड़ के सामान करे।

दूसरे बुर्कीना फासो के लिए भी दुआ करें वहां भी अभी सख़्तियां हैं और जो दहश्तगर्द हैं, शिद्दत पसंद हैं उनके वही अमल हैं कि अल्लाह और रसूलुल्लाह सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम के नाम पर ज़ुलम कर रहे हैं।

फिर अल-जज़ायर के लोगों के लिए भी, वहां भी कुछ हुकूमती कारिंदे या अदालतें जो हैं अहमदियों से ग़लत किस्म के ज़ुलम रवा रख रही हैं। अल्लाह तआला सबको अपनी हिफ़ाज़त में रखे। खासतौर पर दुआओं और सदक़ात पर बहुत ज़्यादा ज़ोर दें। अल्लाह तआला मुख़ालेफ़ीन के शर से हर एक को बचाए।

मैं जुमा की नमाज़ के बाद कुछ जनाज़े ग़ायब भी पढ़ाऊंगा। इस के बाद उनका वर्णन कर देता हूँ।

पहला वर्णन है श्रीमान मुहम्मद रशीद साहिब शहीद का जो चौधरी बशारत अहमद साहिब गोटरयाला ज़िला गुजरात के बेटे थे। उनको दो अहमदीयत के दुश्मनो ने उनके घर आकर 19 फ़रवरी को फायरिंग कर के शहीद कर दिया। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। ब-वक़्त शहादत मरहूम की उम्र 70 साल से अधिक थी।

तफ़सीलात के मुताबिक़ श्रीमान मुहम्मद रशीद साहिब अपने गोटर ज़िला गुजरात में अकेले रिहायश पज़ीर थे जहां उन्होंने इलाक़े के लोगों की सहूलत के लिए फ़्री होमयोंपैथिक डिसपेंसरी बना रखी थी जिससे गांव और इर्द-गिर्द के लोग इस्तफ़ादा करते थे। गांव के दो मुक़ामी नौजवान दवाई लेने के बहाने उनके घर में क़ायम डि-सपेंसरी में दाख़िल हुए और फायरिंग कर दी। बताया जाता है गोली चलाने वाला हमला-आवर हाफ़िज़-ए-क़ुरआन भी था जिसकी एक गोली शहीद मरहूम के माथे पर लगी जिससे श्रीमान मुहम्मद रशीद साहिब की मौक़ा पर ही वफ़ात हो गई। घटना के बाद हमला-आवर फ़रार हो गए। शहीद मरहूम के एक मुलाज़िम के चंद मिनट बाद मौक़ा पर पहुंचने पर घटना का इलम हुआ। घटना का मुक़द्दमा मुताल्लिक़ा पुलिस स्टेशन में दर्ज किया गया। बाद में यह भी कहते हैं कि इन दो हमला आवरों में से एक की नाश क़रीबी खेतों से मिली जो हाफ़िज़-ए-क़ुरआन था जिसकी मौत के बारे में पुलिस अलग से तहक़ीक़ कर रही है जबकि दूसरे हमला-आवर को पुलिस ने हिरासत में ले लिया है। यहां कम से कम यह हुआ है कि पुलिस ने हिरासत में ले है।

शहीद मरहूम के ख़ानदान में अहमदीयत का नफ़ुज़ हज़रत मुंशी सुलतान आलिम साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़रीये से हुआ जो गोटरयाला ज़िला गुजरात के ही रहने वाले थे और मुक़ामी स्कूल में बतौर मुदर्रिस निर्धरित थे। आपने गोटरयाला से 1906 ई. में कादियान जा कर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दस्त-ए-मुबारक पर बैअत की सआदत पाई थी। शहीद मरहूम मैट्रिक के बाद आर्मी में चले गए। चंद साल बाद आर्मी छोड़ दी और कुछ समय बाद 84 ई., 85 ई. में फ़ैमिली समेत नार्वे मुंतक़िल हो गए। नार्वे की सिटीज़न शिप (citizenship) के बावजूद 2008 ई. में नार्वे से वापिस आबाई गांव में चले गए और नार्वे आना जाना रहता था। आबाई गांव में जमीदार के साथ इलाक़े के लोगों की ख़िदमत के लिए फ़्री होमयों पैथिक डिसपेंसरी शुरू की थी। यह सिलसिला आख़िर तक जारी रहा। शहीद मरहूम अल्लाह के फ़ज़ल से मूसी थे। बवक़्त-ए-शहादत बहैसीयत सैक्रेटरी इस्लाह-ओ-इरशाद गोटरयाला ख़िदमत की तौफ़ीक़ पा रहे थे। निहायत मिलनसार, मुहब्बत करने वाले थे। हर एक से अपनाई-यत और दोस्ती का ताल्लुक़ था। ख़िदमत-ए-ख़लक़ का जज़बा नुमायां था। बला तमीज़ मज़हब ज़रूरतमंदों की माली और अख़लाक़ी मुआवनत करते थे। ख़िलाफ़त से इशक़ था। मेहमान-नवाज़ी नुमायां वस्फ़ था। विशेषतः मर्कज़ी मेहमानान की ख़िदमत में पेश पेश रहते। नमाज़ों के पाबंद और गाहे-बा-गाहे इलाक़े में फ़्री मैडीकल कैंप का इंतेज़ाम थे।

उनके भतीजे राफ़े अहमद साहिब मुरब्बी आवरी कोस्ट हैं। वह कहते हैं कि शहीद मरहूम हरदिलअज़ीज़ शख़्सियत के मालिक थे और ख़िदमत-ए-ख़लक़ के जज़बे से सरशार होने के इलावा अच्छे दाई इल्लाल्लाह और निहायत ग़रीबपर्वर थे। अल्लाह तआला ने उनके हाथ में शिफ़ा रखी थी। ख़ुतबात-ए-जुमा बाक़ायदगी से सुनते और सैक्योरिटी के हवाले से बड़े मुहतात भी थे। कुछ अरसा क़बल शहीद मरहूम की पत्नी प्रवीन अख़तर साहिबा ने नार्वे में एक ख़ाब देखी कि शहीद मरहूम पर हमला हुआ है और कोई जान लेने की कोशिश करता है। तो उन्होंने बहरहाल उनको एहतेयात करने के लिए कहा था। शहीद मरहूम के पीछे रहने वालों में पत्नी प्रवीन अख़तर साहिबा हाल मुक़ीम नार्वे और दो बेटे और पाँच बेटियां शामिल हैं जिनमें से एक बेटी पाकिस्तान में है और बाक़ी मुख़्तलिफ़ मुल्कों में मुक़ीम हैं।

मुबलिग़ इंचार्ज नार्वे शाहिद महमूद काहलों साहिब लिखते हैं कि इंतेहाई शरीफ़ नफ़्स और सादा इन्सान थे। नार्वे में होमयोंपैथिक दवाईयों के साथ लोगों की ख़िदमत करते रहे और अब रिटायरमैंट के बाद तक़रीबन बारह तेराह साल से पाकिस्तान में अपने गांव में मुक़ीम थे। लोगों की ख़िदमत कर रहे थे। इस दौरान समय समय पर नार्वे भी आते रहते। अल्लाह तआला ने आपके हाथ में शिफ़ा रखी थी। मरीज़ों की मदद के लिए हर समय तैयार रहते और घर जा कर भी दवाई दे आते थे। उनकी पत्नी आपके अज़ीज़ों में से थीं। उन्होंने पहले बैअत नहीं की थी लेकिन अपने मियां की मुख़ालिफ़त भी नहीं की बल्कि सब बच्चों की शादियां अहमदी घरों में कीं। आख़िरी मर्तबा अक्तूबर 2018 ई. में नार्वे आए तो पत्नी की बैअत भी करवाई और कहते थे कि मैं इसी ग़रज़ से आया हूँ ताकि पत्नी की बैअत करवा सकूँ। कहते कि वहां पाकि-स्तान में मुख़ालेफ़त बहुत ज़्यादा है। धमकियां भी मिलती हैं लेकिन वहां ग़ुर्बत बहुत है और लोग दवाईयां नहीं ख़रीद सकते। मेरी वजह से ग़रीबों को फ़्री ईलाज मयस्सर है और उनकी मदद हो रही है और मुझे मौत का डर नहीं वह तो एक दिन आनी है। अहमदी तो फिर भी ख़िदमत कर रहे हैं (और चाहते हैं) कि इन्सानियत की ख़िदमत करते रहें और बेधड़क हो कर रहे हैं। अल्लाह तआला श्रीमान मुहम्मद रशीद साहिब शहीद से मग़फ़िरत का और रहमत का सुलूक फ़रमाए और शहीद मरहूम के पीछे रहने वालों को सब्र और हौसला फ़रमाए।

दूसरा जो वर्णन है बल्कि दो लोग हैं इस में श्रीमती अमानी बसाम मजलावी साहिबा और अज़ीज़म सुलह अब्दुल मुईन कुतेश

इसकंदरून तुर्की से हैं।

मुरब्बी सिल्सिला और सदर जमाअत सादिक़ साहिब लिखते हैं कि 6 फ़रवरी 2023 ई. को तुर्की में जो दो बड़े भूकंप आए थे उनमें दो अहमदियों की भी वफ़ात हुई है जो कि माँ बेटा थे। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। इस के इलावा भूकंप से उमूमी तौर पर सब अहमदी अल्लाह के फ़ज़ल से महफ़ूज़ रहे हैं ताहम बाज़ों को छोटी मोटी चोटें लगी हैं।

वफ़ात पाने वालों में से एक तेईस साला Syrian अहमदी ख़ातून श्रीमती अमानी बस्साम मजलावी साहिबा का ताल्लुक़ जमाअत इसकंदरून से था। यह अब्दुल मुईन कुतेश साहिब की पत्नी और इसकंदरून जमात के सदर जमात श्रीमान सलाह कुतेश साहिब की बहू थीं। अमानी साहिबा ने अरसा तक़रीबन दो माह क़बल अपने ख़ावंद के साथ बैअत की थी। उनके सुसर श्रीमान सलेह कुतेशे् ने बताया कि भूकंप से एक दिन पहले ही उन्होंने अमानी से पूछा कि क्या तुमने अपने घर वालों को बता दिया है कि तुमने बैअत कर ली है? तो अमानी साहिबा ने कहा कि जी हाँ अब मैंने अपनी

अम्मी अब्बा को अपने अहमदी होने की इत्तिला दे दी है। सालेह साहिब का कहना है कि अमानी साहिबा इस बात पर बहुत ख़ुश थीं कि उनके वालदैन ने उनके अहमदीयत क़बूल करने पर कोई शदीद प्रतिक्रिया नहीं दिखाई और मुख़ालिफ़त नहीं की। उनके साथ तीन साला बेटा अज़ीज़म सालेह भी वफ़ात पा गया। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। ये दोनों मलबे के नीचे दब गए थे और उन्हें दो दिन बाद निकाला जा सका। तब तक उनकी वफ़ात हो चुकी थी। अमानी साहिबा ने अपने पीछे ख़ावंद श्रीमान अब्दुल मुईन कुतेश के इलावा छः साला बेटी अबीरा भी यादगार छोड़े हैं।

शम्सुद्दीन माला बारी साहिब मुरब्बी सिलसिला कबाबीर हैं, कहते हैं कि अमानी साहिबा और उनके मियां अब्दुल मुईन कुतेश की फ़ैमिली सीरिया से हिज्रत कर के तुर्की आई थी। अमानी साहिबा निहायत मुख़लिस ख़िदमतगुज़ार और क़नाअत पसंद ख़ातून थीं। बैअत की एहमीयत पर आगाही हासिल करने के बाद बैअत करने में ताख़ीर नहीं की बल्कि अपने ख़ावंद और भाईयों को भी हौसला देती रहीं। कहते हैं कि मेरी पत्नी वर्णन करती हैं कि उन्होंने यह खासतौर पर नोट किया कि मरहूमा अपने ससुराल के तमाम अफ़राद को साथ लेकर चलती थीं और सब के साथ उनका निहायत प्यार और मुहब्बत का सुलूक था। बैअत वाले दिन बहुत ख़ुश थीं और हमें उन्होंने बहुत इख़लास के साथ अल-विदा किया था। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का फ़रमाए।

तीसरा जो वर्णन है जिनका जनाज़ा पढ़ूँगा वह हैं

उद्देश्य अहमद मुनीब साहिब मुरब्बी सिलसिला

जो 15 फ़रवरी को हार्ट-अटैक से 53 साल की उमर में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। अल्लाह तअला के फ़ज़ल से मूसी थे। उनके वालिद श्रीमान चौधरी जान मुहम्मद साहिब ने 1974 ई. में अहमदीयत क़बूल की थी। 1991 ई. में जामिआ अहमदिया रबोह से मुबश्शिर की डिग्री लेकर फ़ारिग़ उताऊ तहसील हुए। इसके बाद नज़ारत इस्लाह-ओ-इरशाद मर्कज़िया के तहत पाकिस्तान के मुख़्तलिफ़ शहरों में यह ख़िदमात सरअंजाम देते रहे। 1998 ई. से 2006 ई. तक मशरिक़ी अफ़्रीक़ा कीनीया में ख़िदमात बजा लाने की तौफ़ीक़ मिली। इस के बाद फिर पाकिस्तान में ही आ गए और आजकल मुरब्बी ज़िला कोइटा के तौर पर ख़िदमत बजा ला रहे थे। पीछे रहने वालों में पत्नी के इलावा एक बेटा और दो बेटियां शामिल हैं। नाज़िर इस्लाह-ओ-इरशाद साहिब ने भी लिखा है कि बड़े मुख़लिस और वफ़ा से काम करने वाले बड़ी मेहनत से काम करने वाले थे।

मुरब्बी सिलसिला कोइटा अब्दुल कील साहिब लिखते हैं कि वाकफ़ीन का बहुत एहतेराम करने वाले थे। मरहूम को जिस बात का इलम नहीं होता था बला हिचकिचाहट मेरे से पूछ लेते थे जबकि ख़ाकसार उनसे उम्र में काफ़ी छोटा था। मरहूम ने एक अरसा कीनीया में गुज़ारा और हमेशा उनकी बातों में कीनीया का वर्णन ज़रूर होता और कीनीया और कीनीया के लोग गोया कि उनके दिल में घर कर गए थे। मरहूम अक्सर कहा करते थे कि कीनीया के लोग इख़लास में बहुत आगे हैं और बहुत मुहब्बत करने वाले हैं।

फ़रीद मुबारक साहिब क़ायद मजलिस हैं। वह लिखते हैं कि इंतेहाई नफ़ीस, पाक-बाज़, दीन के फ़िदाई, जमाअत की ख़ातिर अपने आपको क़ुर्बान करने वाले, ख़िलाफ़त से बे-इंतिहा मुहब्बत करने वाले इन्सान थे। कहते हैं जब मुझे मालूम हुआ कि बहुत सीनीयर मुरब्बी का यहां कोइटे में तबादला हो गया है तो मैं बड़ा ख़ुश हुआ कि कोइटा की जमाअत को इस की ज़रूरत थी। कहते हैं पहली मुलाक़ात में ही उन्होंने ख़ाकसार का दिल मोह लिया। जिस दिन उन्होंने ज़िला कोइटा की मस्जिद में पहला ख़ुतबा दिया तो हर सुनने वाले ने उनकी तारीफ़ की। बहुत मेहमान नवाज़ थे। हर एक को अपने घर आने की दावत देते। भरपूर ख़िदमत करते। उनके दिल में जमाअत के लिए जो दर्द था वह उनकी आँखों से अयाँ था। जब तक़रीर करते तो ऐसा जोश, वलवला उनके अंदाज़ में होता था कि सुनने वाले की आँखों से आँसू रवां हो जाते थे। इजलासात और दौराजात में शामिल होते और हर मिलने वाले के दिल में जमाअत के लिए फ़िक्र पैदा करने की भरपूर कोशिश करते। उनके पास जमाअती इलम का भी बेपनाह ख़ज़ाना था। आजिज़ी इस क़दर थी कि ऐसा आजिज़ इन्सान कहते हैं मैंने अपनी ज़िंदगी में नहीं देखा। फिर कहते हैं कि गुज़शता जुमा जिससे अगले दिन उनकी वफ़ात हुई है उनके चेहरे पर एक अलग तरह का नूर था। जब मेरी उन पर नज़र पड़ी तो मैंने नाज़िम उमूमी साहिब के सामने मुरब्बी साहिब से इज़हार किया कि आज तो वह बहुत ख़ूबसूरत लग रहे हैं। हमें यह मालूम नहीं था कि यह उनका आख़िरी जुमा है। इस के बाद उनकी वफ़ात हो गई। अल्लाह तआला मरहूम से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। दर्जात बुलंद करे। इन सब के जनाज़े इं शा अल्लाह अभी पढ़ाऊंगा।

★ ★ ★

पृष्ठ 16 का शेष

है। सूरः इख़लास ही को देखो कि तौहीद के कुल मरातिब को वर्णन फ़रमाया है।" छोटी सी सूरत है लेकिन तौहीद का पूरा मज़मून इस में वर्णन कर दिया है "और हर किस्म के शिर्कों का रद्द कर दिया है। इसी तरह सूरत फ़ातेहा को देखो किस क़दर एजाज़ है। छोटी सी सूरत जिसकी सात आयतें हैं लेकिन दरअसल सारे क़ुरआन शरीफ़ का फ़न और ख़ुलासा और फ़हरिस्त है और फिर इस में ख़ुदा तआला की हस्ती, उस के सिफ़ात, दुआ की ज़रूरत, उस की क़बूलीयत के अस्बाब और ज़राए, मुफ़ीद और सूदमंद दुआओं का तरीक़, नुक़्सान रसां राहों से बचने की हिदायत सिखलाई है वहां दुनिया के समस्त मज़ाहिब बातिला का रद्द इस में मौजूद है।"इस सूर फ़ातिहा में छोटी सी सूरत में सारी बातें आ गईं। "अक्सर किताबों और मज़हब वालों को देखोगे कि वे दूसरे मज़हब की बुराईयां और नुक़्स वर्णन करते हैं और दूसरी तालीमों पर नुक्ता-चीनी करते हैं परंतु इन नुक्ता चीनियों को पेश करते हुए यह कोई अहल मज़हब नहीं करता कि इस के बिल्मुक़ाबिल कोई उम्दा तालीम भी पेश करे और दिखाए कि अगर मैं अमुक बुरी बात से बचाना चाहता हूँ तो इस की बजाय यह अच्छी तालीम देता हूँ यह किसी मज़हब में नहीं,

यह फ़ख़र क़ुरआन शरीफ़ ही को है कि जहां वह दूसरे मज़ाहिब बातिला का रद्द करता है और उनकी ग़लत तालीमों को खौलता है वहां असली और हक़ीक़ी तालीम भी पेश करता है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 46 से 48 ऐडीशन 1984 ई.)

यह ख़ूबसूरती ऐसी है जिसे आज के नाम निहाद पढ़े लिखे भी रद्द नहीं कर सकते। बहुत से अवसरों पर मैंने देखा है कि जब ग़ैरों के सामने क़ुरआन शरीफ़ की तालीम के मुताबिक़ किसी मसला का हल रखा जाए तो वे उसे तस्लीम करते हैं।

क़ुरआन-ए-करीम की वर्णन फ़रमाते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि

क़ुरआन एक आसान फ़हम किताब है।

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "कुछ नादान लोग कहा करते हैं कि हम क़ुरआन शरीफ़ को नहीं समझ सकते इस वास्ते उसकी तरफ़ तवज्जा नहीं करनी चाहिए कि यह बहुत मुश्किल है। यह उनकी ग़लती है।' बहाना बना दिया कि बड़ा मुश्किल है जी क़ुरआन शरीफ़ को समझना। इस को हम समझ नहीं सकते इसलिए ज़्यादा तवज्जा की ज़रूरत नहीं। बस पढ़ लिया तो काफ़ी है। फ़रमाया कि "क़ुरआन शरीफ़ ने एतेक़ादी मसाइल को ऐसी फ़साहत के साथ समझाया है जो बेमिसल और बेमानिंद है और इसके दलायल दिलों पर-असर डालते हैं।' जहां तक एतेक़ादी मसायल का ताल्लुक़ है बड़ा खुल के बताया है। फ़रमाया कि "यह क़ुरआन ऐसा बलीग़ और फ़सीह है कि अरब के बादिया नशीनों को जो बिल्कुल अनपढ़ थे समझा दिया था तो फिर अब क्योंकर उस को नहीं समझ सकते।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 9 पृष्ठ 228 ऐडीशन 1984 ई.)

वे अनपढ़ लोग जो थे, गांव में रहने वाले थे बिल्कुल जाहिल थे बल्कि इन्सानों से भी नीचे गिरे हुए थे जिनको बाख़ुदा इन्सान बनाया। उनको अगर समझ आ गई तो अब क्यों नहीं तुम लोगों को समझ आ सकती जिनमें अक्सरियत कुछ न कुछ पढ़े लिखो की है। फ़रमाया कि

"सीधी और सच्ची और सादा आम फहम मंतिक़ वह है जो क़ुरआन शरीफ़ में है इस में कोई पेचीदगी नहीं। एक सीधी राह है जो ख़ुदा तआला ने हमको सिखला दी है। चाहिए कि आदमी क़ुरआन शरीफ़ को ग़ौर से पढ़े। इस के अमर और नही को अलग अलग देख रखे।" जो बातें कहने वाली, अमल करने वाली हैं उनको देखे। जिनसे मना किया गया है उनको देखे, अलैहदा रखे "और उन पर अमल करे और इसी से वह अपने ख़ुदा को ख़ुश कर लेगा।

बड़ा सादा तरीक़ा है, जो अहकामात करने के हैं, जो ज़ाहिरी अहकाम तुम्हें नज़र आ रहे हैं उन पर अमल करो, जिनसे रोका गया है उनसे रुक जाओ इसी से ख़ुदा ख़ुश हो जाएगा।

★ ★ ★

ख़ुत्बः जुमअः

यह चमत्कार केवल क़ुरआन-ए-शरीफ़ ही का है कि फ़साहत-ओ-बलाग़त भी है, सच्चाई भी है, हिक्मत भी हैं

जिन बातों पर ईसाई गर्व करते हैं वे समस्त सच्चाईयां मुस्तक़िल तौर पर और निहायत ही अकमल तौर पर क़ुरआन-ए-मजीद में मौजूद हैं

"हदीस क़ाज़ी नहीं बल्कि क़ुरआन इस पर क़ाज़ी है" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

"क़ुरआन शरीफ़ में जो अहकाम-ए-इलाही नाज़िल हुए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसको अमली रंग में करके और कराके दिखा दिया और एक नमूना क़ायम कर दिया। अगर यह नमूना न होता तो इस्लाम समझ में नहीं आ सकता लेकिन असल क़ुरआन है"
(हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

"यह क़ुरआन शरीफ़ का एजाज़ है कि इस में सारे शब्द ऐसे मोती की तरह पिरोए गए हैं और अपने-अपने मुक़ाम पर रखे गए हैं कि कोई एक जगह से उठा कर दूसरी जगह नहीं रखा जा सकता और किसी को दूसरे लफ़्ज़ से बदला नहीं जा सकता लेकिन इसके बावजूद उसके क़ाफ़िया--बिंदी और फ़साहत ओ बलाग़त के समस्त लवाज़म मौजूद हैं।" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

"इस वक़्त कोई और मज़हब ऐसा नहीं है जिसका समर्थक और अनुयायी यह दावा कर सकता हो कि वे भविष्यवाणियाँ कर सकता है या उससे ख़वारिक़ का ज़हूर होता है इस लिए इस पहलू से क़ुरआन शरीफ़ का चमत्कार समस्त किताबों के एजाज़ से बढ़ा हुआ है।"

"यह गर्व क़ुरआन शरीफ़ ही को है कि जहां वह दूसरे मज़ाहिब बातला का रद्द करता है और उनकी ग़लत तालीमों को खौलता है वहां असली और हक़ीक़ी तालीम भी पेश करता है।" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

बड़ा सादा तरीक़ा है, जो अहकामात करने के हैं, जो ज़ाहिरी अहकाम तुम्हें नज़र आ रहे हैं उन पर अमल करो, जिनसे रोका गया है उनसे रुक जाओ इसी से ख़ुदा ख़ुश जाएग।
क़ुरआन एक आसान किताब है
जलसा सालाना बंगला देश पर बुलवाइयों के हमले में जाम-ए-शहादत नोश करने वाले श्रीमान ज़ाहिद हुसैन साहिब के इलावा श्रीमान कमाल बदाह साहिब आफ़ अल-जज़ायर, डाक्टर शमीम अहमद मलिक साहिबा आफ़ कैनेडा, श्रीमान फ़र्हाद अहमद अम्मीनी साहिब आफ़ जर्मनी और श्रीमान चौधरी जावेद अहमद बिस्मिल साहिब आफ़ कैनेडा का वर्णन और नमाज़-जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 10 मार्च 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَاالضَّآلِّيْنَ

आजकल ख़ुत्बात में क़ुरआन-ए-करीम की विशेषताओं का वर्णन कर रहा हूँ, ख़ूबियों का वर्णन कर रहा हूँ। इस के मुहासिन और खूबियां वर्णन फ़रमाते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि

क़ुरआन-ए-करीम कामिल किताब है।

इस सिलसिला में आप अलैहिस्सलाम वज़ाहत करते हुए एक जगह फ़रमाते हैं कि "मैं सच्च कहता हूँ कि क़ुरआन शरीफ़ ऐसी कामिल और जामे किताब है कि कोई किताब उसका मुक़ाबला नहीं कर सकती।" आप ने मिसाल देते हुए फ़रमाया कि "क्या वेद में कोई ऐसी श्रुति है जो هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ का मुक़ाबला करे। अगर ज़बानी इक़रार कोई चीज़ है अर्थात उसके समरात और नतायज की ज़रूरत नहीं तो फिर सारी दुनिया किसी न किसी रंग मैं खुदा तआला का इक़रार करती है। और भगती, इबादत, सदक़ा ख़ैरात को भी अच्छा समझती है और किसी न किसी सूरत में इन बातों पर अमल भी करती है। फिर वेदों ने आकर दुनिया को क्या बख़्शा?" यहां तक हिंदूओं को यह जवाब दे रहे थे। "या तो ये साबित करो कि जो कौमें वेद को नहीं मानती हैं उनमें नेकियां बिल्कुल नष्ट हो चुकी हैं और या कोई और इमतेयाज़ी निशान बताओ।" फ़रमाते हैं : "कुरान-ए-शरीफ़ को जहां से शुरू किया है इन तरक़्क़ियों का वादा कर लिया है जो स्वभावतः रूह तक़ाज़ा करती है। इसलिए सूरः फ़ातिहा में اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ (अल् फ़ातिहा : 6) की तालीम की और फ़रमाया कि तुम यह दुआ करो कि हे अल्लाह हम को सिराते-ए-मुस्तक़ीम की हिदायत फ़र्मा।" यह दुआ भी दी और हिदायत फ़रमाने की जब दुआ दी तो इस का मतलब, वादा भी किया कि मैं सिराते-ए-मुस्तक़ीम पर चलाऊंगा। फिर फ़रमाया कि "वह सिराते-ए-मुस्तक़ीम जो उन लोगों की राह है जिन पर तेरे इनाम-ओ-इकराम हुए। इस दुआ के साथ ही सूरः अल् बक़रः की पहली ही आयत में यह बशारत दे दी ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ فِيْهِ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ (अल्बकर: 3) "अगर हिदायत की दुआ सिखाई तो उस के हुसूल के लिए एक लाहे-ए-अमल भी बता दिया कि इस पर अमल करो। यह किताब है जिस पर अमल करने से तुम्हें,मुत्तक़ियों को हिदायत मिलेगी। "गोया रूहें दुआ करती हैं और साथ ही क़बूलियत अपना असर दिखाती है और वह वादा दुआ की क़बूलियत का क़ुरआन-ए-मजीद के नुज़ूल की सूरत में पूरा होता है। एक तरफ़ दुआ है और दूसरी तरफ़ उस का नतीजा मौजूद है। यह ख़ुदा तआला का फ़ज़ल और करम है जो उसने फ़रमाया परंतु अफ़सोस दुनिया इस से बे-ख़बर और ग़ाफ़िल है और इस से दूर रह कर हलाक हो रही है।"

फिर आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "मैं फिर कहता हूँ कि ख़ुदा तआला ने जो इब्तदा ए क़ुरआन-ए-मजीद में मुत्तक़ियों के सिफ़ात वर्णन फ़रमाए हैं उनको मामूली सिफ़ात में है लेकिन जब इन्सान क़ुरआन-ए-मजीद पर ईमान ला कर उसे अपनी हिदायत के लिए दस्तूर-ए-अमल बनाता है तो वह हिदायत के इन आला मदारिज और मुरातिब को पा लेता है जो هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ (अल्बकरः : 3) मैं मक़सूद रखे हैं।

कुरान-ए-शरीफ़ की इस इल्लत-ए-ग़ाई के तसव्वुर से ऐसी लज़्ज़त और सरूर आता है कि अलफ़ाज़ में हम इस को वर्णन नहीं कर सकते क्योंकि इस से ख़ुदा तआला के ख़ास फ़ज़ल और क़ुरआन-ए-मजीद के कमाल का पता लगता है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 8 पृष्ठ 317-318 ऐडीशन 1984 ई.)

फिर इस बात को खोलते हुए कि क़ुरआन-ए-करीम की तालीम एक पूर्ण तालीम हैं

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "समय की ज़रूरत आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अवतरित होने की एक और दलील है और اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ में फ़र्मा दिया।" यानी ज़माना जो था, उस वक़्त हालात जो थे दुनिया के वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बेअसत की दलील है क्योंकि ज़रूरत थी उस वक़्त और फिर उसका अंजाम क्या हुआ इस बेअसत का, तालीम कैसी हुई मुकम्मल اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ में फ़र्मा दिया। फ़रमाया कि "इस तरह यह बाब-ए-नबुव्वत की दूसरी फ़सल है। अकमाल से यही मतलब नहीं कि सूरतें उतार दीं बल्कि तकमील--ए-नफ़स और ततहीर-ए-क़लब की।' क़ुरआन-ए-करीम उतार दिया, तालीम दे दी ,किताब उतार दी। यही कमाल नहीं है बल्कि कमाल यह है कि इन्सान के नफ़स की हालत को भी मुकम्मल कर दिया। जो अमल करने वाले हैं उनको मुकम्मल इन्सान बना दिया। ततहीर-ए-क़लब की। उन के दिलों को पाक कर दिया। फ़रमाया कि "वहशियों से इन्सान फिर उसके बाद अक़लमंद और बाइख़लाक़ इन्सान और फिर बाख़ुदा इन्सान बना दिया और ततहीर नफ़स, तकमील और तहज़ीब-ए-नफ़स के मदारिज तै करा दिए।' इन्सान को तहज़ीब के भी आला मदारिज सिखा दिए,नफ़स के पाक करने के भी आला मदारिज सिखा दिए और उनकी इंतेहा भी कर दी। "और इसी तरह पर किताबुल्लाह को भी पूरा और कामिल कर दिया।" फ़रमाया कि "यहाँ तक कि कोई सच्चाई और सदाक़त नहीं जो क़ुरआन शरीफ़ में न हो। मैंने अग्नी होतरी को बार बार कहा" यह हिंदूओं की मज़हबी तंज़ीम के एक बानी थे। पहले एक फ़िरक़े में थे फिर उन्होंने अपना फ़िर्क़ा शुरू किया या तंज़ीम शुरू की। बहरहाल हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से उनकी काफ़ी बेहस चलती रही। फ़रमाते हैं कि मैंने उसको बार बार कहा "कि कोई ऐसी सच्चाई बताओ जो क़ुरआन शरीफ़ में न हो मगर वह न बता सका। इस प्रकार एक ज़माना मुझ पर गुज़रा है कि

मैंने बाइबल को सामने रखकर देखा। जिन बातों पर ईसाई नाज़ करते हैं वे समस्त सच्चाईयां मुस्तक़िल तौर पर और निहायत ही अकमल तौर पर क़ुरआन-ए-मजीद में मौजूद हैं परंतु अफ़सोस है कि मुस्लमानों को इस तरफ़ तवज्जा नहीं। वह क़ुरआन शरीफ़ पर तदब्बुर ही नहीं करते और न उनके दिल में कुछ अज़मत है अन्यथा यह तो ऐसा फ़ख़र का मुक़ाम है कि इस की उदाहरण दूसरों में है ही नहीं।"

फ़रमाया : "उद्देश्य اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ (अल्मायद : 4) की आयत दो पहलू रखती है। एक यह कि तुम्हारी ततहीर कर चुका।" पाक कर दिया तुम्हें। "दोम किताब मुकम्मल कर चुका।" मुकम्मल शरीयत तुम्हारे पर उतार दी। फ़रमाते हैं "कहते हैं जब यह आयत अवतरित हुई वह जुमा का दिन था। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से किसी यहूदी ने कहा कि इस आयत के नुज़ूल के दिन ईद कर लेते।' ऐसी कामिल और प्रभावी आयत है कि इस दिन तो ख़ुशी में ईद होनी चाहिए थी। यहूदी ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को यह कहा। "हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि जुमा ईद ही है।" जुमा वाले दिन यह आयत उत्तरी तो "जुमा ईद ही है परंतु बहुत से लोग इस ईद से बे-ख़बर हैं। दूसरी ईदों को कपड़े बदलते हैं लेकिन इस ईद की पर्वा नहीं करते और मैले कुचैले कपड़ों के साथ आते हैं।" जुमे की एह-मियत भी आप वाज़ेह फ़र्मा रहे हैं कि जुमा पढ़ना कितना ज़रूरी है। फ़रमाया कि "मेरे नज़दीक यह ईद दूसरी ईदों से अफ़ज़ल है।" अर्थात जुमा पर भी ख़ास एहतेमाम होना चाहिए। जुमा पर शामिल होने का इंतेज़ाम होना चाहिए। सिर्फ साल के बाद ईद पढ़ना नहीं। फ़रमाया कि "इसी ईद के लिए सूरः जुमा है और इसी के लिए क़सर-ए--नमाज़ है और जुमा वह है जिसमें अम्न के वक़्त आदम पैदा हुए। और यह ईद उस ज़माना पर भी दलालत करती है कि पहला इन्सान इस ईद को पैदा हुआ। क़ुरआन शरीफ़ का ख़ातमा उसी पर हुआ।"

(मल्फ़ूज़ात भग 8 पृष्ठ 399 ऐडीशन 1984 ई.)

फिर इस बात की वज़ाहत फ़रमाते हुए कि कुरान-ए-करीम हदीस क़ाज़ी है

आप फ़रमाते हैं : "एक और ग़लती अक्सर मुस्लमानों के दरमयान है कि वह हदीस को क़ुरआन शरीफ़ पर मुक़द्दम करते हैं हालाँकि यह ग़लत बात है। क़ुरआन शरीफ़ एक यक़ीनी मर्तबा रखता है और हदीस का मर्तबा ज़न्नी है।" क़ुरआन-ए--करीम की तालीम तो एक यक़ीनी तालीम है लेकिन हदीस को हम यक़ीनी नहीं कह सकते। वह बहुत सारी रिवायतें तो बाद में इकट्ठी हुईं। फ़रमाया कि

"हदीस क़ाज़ी नहीं बल्कि क़ुरआन इस पर क़ाज़ी है।"

फ़ैसला करना क़ुरआन का काम है। "हाँ हदीस क़ुरआन शरीफ़ की तशरीह है।" बहुत सारी हदीसें हैं जिनसे आयत की तशरीह मिल जाती है। "इस को अपने मर्तबा पर रखना चाहिए। हदीस को इस हद तक मानना ज़रूरी है कि क़ुरआन शरीफ़ के मुख़ालिफ़ न पड़े और इस के मुताबिक़ हो लेकिन अगर उस के मुख़ालिफ़ पड़े तो वह हदीस नहीं बल्कि मर्दूद है। लेकिन कुरान-ए-शरीफ़ के समझने के वास्ते हदीस ज़रूरी है।"

लेकिन साथ ये भी याद रखो कि हदीस में बहुत सारी हदीसें ऐसी हैं जिससे कुछ आयात की वज़ाहत होती है। कुछ बुज़ुर्ग सहाबा की रिवायतें हैं इसलिए उस को समझना भी चाहिए लेकिन यह ख़्याल रखो कि हदीस क़ुरआन-ए-करीम के मुख़ालिफ़ न हो। फ़रमाया कि

"क़ुरआन शरीफ़ में जो अहकाम इलाही नाज़िल हुए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसको अमली रंग में करके और करा के दिखा दिया और एक नमूना क़ायम कर दिया। अगर यह नमूना न होता तो इस्लाम समझ में नहीं आ सकता लेकिन असल क़ुरआन है।

कुछ अहल-ए-कशफ़ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बराह-ए-रास्त ऐसी अहादीस सुनते हैं जो दूसरों को मालूम नहीं हुईं या मौजूदा अहादीस की तसदीक़ कर लेते हैं।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 8 पृष्ठ 363-364 ऐडीशन 1984 ई)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने बारे में भी लिखा हुआ है कि मैंने भी कुछ अहादीस आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बराह-ए-रास्त सुनी।

(उद्धृत सीरत अल्महदी भाग 1 हिस्सा सोम पृष्ठ 550 रिवायत नंबर : 572)

फिर फ़साहत क़ुरआन के बारे में वर्णन फ़रमाते हुए आप फ़रमाते हैं कि "क़ुरआन शरीफ़ इबारत में इस क़दर फ़साहत और औचित्य और लताफ़त और नरमी और आब-ओ-ताब रखता है कि अगर किसी सरगर्म नुक्ता चीन और सख़्त मुख़ालिफ़--ए-इस्लाम को कि जो अरबी की अमला-ए-इन शा में कामिल दस्तगाह रखता हो हाकिम बाख़्तयार की तरफ़ से यह लासना से पूर्ण हुक्म सुनाया जाए कि अगर तुम उदाहरणतः बीस बरस के अर्से में कि गोया एक उम्र की मीयाद है। इस तौर पर क़ुरआन की नज़ीर पेश कर के न दिखलाओ कि क़ुरआन के किसी मुक़ाम में से सिर्फ दो-चार सतर का कोई मज़मून लेकर इसी के बराबर या इस से बेहतर कोई नई इबारत बना लाओ। जिसमें वे सब मज़मून अपने समस्त दक़ायक़ हक़ायक़ के आ जाए और इबारत भी ऐसी बलीग़ और फ़सीह हो जैसी क़ुरआन की तो तुमको इस सादगी की वजह से सज़ा-ए-मौत दी जावेगी तो फिर भी बावजूद सख़्त इनाद और अंदेशा रुस्वाई और ख़ौफ़ मौत की नज़ीर बनाने पर हरगिज़ क़ादिर नहीं हो सकता जबकि दुनिया के सदहा ज़बान दानों और इंशा प्रदाज़ों को अपने मददगार ले।"

(बराहीन-ए-अहमदिया, रुहानी ख़ज़ायन भाग 1 पृष्ठ 286 से 297)

अब एक तरफ़ ख़ौफ़ भी है। फ़रमाया कि हाकिम की तरफ़ से इस को बीस साल का अरसा भी दे दिया जाए कि क़ुरआन शरीफ़ जैसी कोई नज़ीर बना कर लाओ, चंद आयतें ही बना के ले आओ, सतरें ही बना के ले आओ लेकिन वह इस के बावजूद नहीं ला सकता। यह है कमाल क़ुरआन-ए-करीम का और उस की फ़साहत का।

आप ने फ़रमाया यह कोई ख़्याली या फ़र्ज़ी बात नहीं है बल्कि जब से कि क़ुरआन शरीफ़ नाज़िल हुआ है यह चैलेंज दुनिया के सामने है कि तुम ले के आओ। आज भी कुछ इस्लाम मुख़ालिफ़ उस की नज़ीर लाने की कोशिश करते हैं। आए दिन कोई न कोई शोशा छोड़ देता है और यह दावा करते हैं कि हम मिसाल पेश करते हैं लेकिन क़ुरआन-ए-करीम की फ़साहत-ओ-बलाग़त के क़रीब भी नहीं पहुंच सकते। सिर्फ दावे हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "फ़साहत, बलाग़त में (इस का मुक़ाबला असंभव है) उदाहरणतः सूरः फ़ातेहा की मौजूदा तर्तीब छोड़कर कोई और तर्तीब प्रयोग करो तो वे मतालिब-ए-आलीया और मक़ासद-ए-उज़्मा जो इस तर्तीब में मौजूद हैं मुम्किन नहीं कि किसी दूसरी तर्तीब में वर्णन हो सकें। कोई सी सूरत ले लो। خواہ قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَد(अल् इखलास : 2) ही क्यों न हो। जिस क़दर नरमी और मुलातिफ़त की रियाइत को मलहूज़ रख कर इस में मआरिफ़ और हक़ायक़ हैं वह कोई दूसरा वर्णन न कर सकेगा। यह भी केवल क़ुरआन का चमत्कार ही है। मुझे हैरत होती है जब कुछ नादान मुक़ामात-ए-हरीरी या सबा मोअलक" ये दो किताबें हैं" को बेनज़ीर और बेमिसल कहते हैं। कि बहुत आला किताबें हैं। उनकी तो मिसाल ही कोई नहीं। फ़रमाते हैं कि "और इस तरह पर क़ुरआन-ए-करीम की अद्वितीयता पर हमला करना चाहते हैं। इतना नहीं समझते कि अव्वल तो हरीरी के लेख ने कहीं उस के बेनज़ीर होने का दावा नहीं किया और दूसरा यह कि हरीरी का लेखक ख़ुद क़ुरआन-ए-करीम की एजाज़ी फ़साहत का क़ायल था। इसके अतिरिक्त

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 08 Thursday 13 April 2023 Issue No. 13-15

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

सदमार्ग पर आपरो लगाने वाले और सदाक़त को ज़हन में नहीं रखते बल्कि उनको छोड़कर महिज़ अलफ़ाज़ की तरफ़ जाते हैं। ऊपर वर्णित किताबें हक़ और हिक्मत से ख़ाली हैं। एजाज़ की ख़ूबी और वजह तो यही है कि हर एक किस्म की रियाइत को दृष्टिगत रखे। फ़साहत और बलाग़त भी हाथ से जाने न दे। सदाक़त और हिक्मत को भी न छोड़े।

यह चमत्कार केवल क़ुरआन-ए-शरीफ़ ही का है' कि फ़साहत-ओ-बलाग़त भी है, सच्चाई भी है, हिक्मत की बातें भी हैं।

"जो सूरज की तरह रोशन है और हर पहलू से अपने अंदर एजाज़ी ताक़त रखता है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 84-85 ऐडीशन 1984 ई.)

फिर फ़रमाते हैं कि "क़ुरआन शरीफ़ के चमत्कार फ़साहत-ओ-बलाग़त के जवाब में एक दफ़ा पादरी फ़ंडर ने हरीरी और अबुल-फ़ज़ल और कुछ अंग्रेज़ी किताबों को पेश किया था। मुद्दत की बात है। हमने उस वक़्त भी यही सोचा था कि यह झूठ बोलता है क्योंकि अव्वल तो उन लेखकों को कभी यह दावा नहीं हुआ कि उनका कलाम बेमिसल है बल्कि वह ख़ुद अपनी कम-माइगी का हमेशा इक़रार करते रहे हैं और क़ुरआन-ए-शरीफ़ की तारीफ़ करते हैं। दूसरा उन लोगों की किताबों में अर्थात शब्दों के अधीन हो कर चलता है। केवल शब्द जोड़े हुए होते हैं। क़ाफ़िया के वास्ते एक लफ़्ज़ के मुक़ाबले दूसरा लफ़्ज़ तलाश किया जाता है और कलाम में हिक्मत और मआरिफ़ का लिहाज़ नहीं होता और क़ुरआन शरीफ़ में इल्तिज़ाम है हक़ और हिक्मत का।" सच्चाई भी है। हिक्मत भी है। केवल अलफ़ाज़ का जोड़ना नहीं है। इस में ख़ूबसूरती पैदा नहीं की गई। फ़रमाया कि "असल में इस बात का निबाहना कि हक़ और हिक्मत के कलमात के साथ क़ाफ़िया भी दरुस्त हो यह बात ताईद-ए--इलाही से हासिल होती है।" यह असल चीज़ है कि हक़ और हिक्मत भी हो और क़ाफ़िया भी दरुस्त हो तब पता लगता है ताईद-ए-इलाही है। "अन्यथा इन्सानों के कलाम ऐसे होते हैं जैसा कि हरीरी वग़ैरा।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 2 पृष्ठ 205 ऐडीशन 1984 ई.)

फिर आप अलैहिस्सलाम एक मज्लिस में इस बारे में मज़ीद फ़रमाते हैं कि तफ़सीर एजाजुल मसीह के मुताल्लिक़ यह वर्णन था कि मुख़ालेफ़ीन में से किसी को ख़ुदा ने यह ताक़त नहीं दी कि इस का मुक़ाबला कर सके। यह तफ़सीर का वर्णन हो रहा था। इस पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की एक मज्लिस में यह वर्णन हो रहा था तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि "क़ुरआन शरीफ़ के एक चमत्कार होने के मुताल्लिक़ दो मज़हब हैं। एक तो यह कि ख़ुदा तआला ने मुख़ाले-फ़ीन से सिर्फ-ए-हिम्मत कर दिया। अर्थात उन लोगों को तौफ़ीक़ न हुई कि इस वक़्त मुक़ाबला में कुछ करके दिखलाते और दूसरा मज़हब जो कि सही और सच्चा और पक्का मज़हब है और हमारा भी वही मज़हब है। वह यह है कि मुख़ालिफ़ ख़ुद इस बात में आजिज़ थे कि मुक़ाबला कर सकते। असल में उनके इलम और अक़्ल छीने गए थे। क़ुरआन शरीफ़ का चमत्कार हमारी तफ़सीरुल - क़ुरआन के मुआमला से ख़ूब समझ में आ सकता है। हज़ारों मुख़ालेफ़ मौजूद हैं जो आलिम फ़ाज़िल कहलाते हैं। कई ग़ैरत दिलाने वाले अलफ़ाज़ भी विज्ञापनों में लिखे गए हैं परंतु कोई ऐसा न करसका कि इस निशान का मुकाबला करता।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 2 पृष्ठ 217-218 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः आप की कुतुब को इस नज़रिए से भी हमें पढ़ना चाहिए कि क़ुरआन शरीफ़ की समझ आए।

फिर एक मौक़ा पर आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "ख़ुदा तआला ने क़ुरआन शरीफ़ को जो चमत्कार अता फ़रमाया है वे आला दर्जा की अख़लाक़ी तालीम और उसूल तमद्दुन का है और इस की बलाग़त और फ़साहत का है जिसका मुक़ाबला कोई इन्सान कर नहीं सकता ऐसा ही चमत्कार ग़ैब की ख़बरों और भविष्यवाणियों का है। इस ज़माने का कोई जादूगरी में उस्ताद हरगिज़ ऐसा करने का दावा नहीं करता।" फ़साहत-ओ-बलाग़त भी है और ग़ैब की ख़बरें, भविष्यवाणियाँ भी मौजूद हैं। यह कोई जादूगर तो नहीं दिखा सकता। जादूगर तो ऐसी बातें नहीं दिखा सकता, न दावा कर सकता। फ़रमाया "और इस तरह अल्लाह तआला ने हमारे निशानात को एक तमीज़ साफ़ अता फ़रमाई है ताकि किसी शख़्स को हीला हुज्जत बाज़ी का न रहे और इस तरह ख़ुदा तआला ने अपने निशानात खोल खोल कर दिखाए हैं जिनमें कोई संदेह अपना दख़ल नहीं पैदा कर सकता।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 10 पृष्ठ 172 ऐडीशन 1984 ई.)

फिर क़ुरआन-ए-करीम की फ़साहत के बारे में आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया : "लोगों की फ़साहत और बलाग़त अलफ़ाज़ के मातहत होती है और इस में सिवाए क़ाफ़िया-बंदी के और कुछ नहीं होता। जैसे एक अरब ने लिखा है سَافَرْتُ اِلٰی رُوْمَ وَاَنَا عَلٰی جَمَلٍ مَالُوْمٍ मैं रुम को रवाना हुआ और मैं एक ऐसे ऊंट पर सवार हुआ जिसका पेशाब बंद था। ये अलफ़ाज़ केवल क़ाफ़िया-बंदी के वास्ते लाए हैं।

यह क़ुरआन शरीफ़ का एजाज़ है कि इस में सारे अलफ़ाज़ ऐसे मोती की तरह पिरोए गए हैं और अपने अपने मुक़ाम पर रखे गए हैं कि कोई एक जगह से उठा कर दूसरी जगह नहीं रखा जा सकता और किसी को दूसरे लफ़्ज़ से बदला नहीं जा सकता लेकिन इस के बावजूद उस के क़ाफ़िया-बिंदी और फ़साहत ओ बलाग़त के समस्त लवाज़म मौजूद हैं।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 10 पृष्ठ 172-173 ऐडीशन 1984 ई.)

फिर क़ुरआन-ए-करीम की फ़साहत- का हुस्न वर्णन फ़रमाते हैं। एक मज्लिस में आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि "जिस क़दर ये निशानात और आयात यहां ज़ाहिर हो रही हैं यह दरहक़ीक़त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ही के ख़वारिक़ और मोजज़ात और यह भविष्यवाणियाँ क़ुरआन शरीफ़ ही की पेश गोईआं हैं क्योंकि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ही के इत्तिबा और क़ुरआन शरीफ़ ही की तालीम के समरात हैं। और इस वक़्त कोई और मज़हब ऐसा नहीं है जिसका पैरौ और मतबा यह दावा कर सकता हो कि वह भविष्यवाणियाँ कर सकता है या उस से ख़वारिक़ का ज़हूर होता है। इस लिए इस पहलू से क़ुरआन शरीफ़ का चमत्कार समस्त किताबों के एजाज़ से बढ़ा हुआ है।"

आपके अपने मोजज़ात जो हैं वे भी क़ुरआन शरीफ़ की वजह से ही हैं, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पैरवी की वजह से हैं।

फिर फ़रमाया कि "फिर एक और पहलू फ़साहत बलाग़त ऐसी आला दर्जा की और मुसल्ल है कि इंसाफ़ पसंद दुश्मनों को भी उसे मानना पड़ा है।

कुरान-ए-शरीफ़ ने فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِّن مِّثْلِهِ (अल्बकरः : 24) का दावा किया लेकिन आज तक किसी से मुम्किन नहीं हुआ कि इस की मिसल ला सके।" यह दावा क़ुरआन शरीफ़ का है कि इस जैसी सूरत ले के आओ। "अरब जो बड़े फ़सीह-ओ--बलीग़ बोलने वाले थे और ख़ास मौक़ों पर बड़े बड़े मजमा करते और उनमें अपने क़सायद सुनाते थे वे भी इस के मुक़ाबला में आजिज़ हो गए। और फिर क़ुरआन शरीफ़ की फ़साहत-ओ-बलाग़त ऐसी नहीं है कि इस में सिर्फ अलफ़ाज़ का ततब्बो किया जावे" उनकी पैरवी करो, अर्थात उनकोfollow करो "और अर्थों और मुतालिब की परवाह न की जाए बल्कि जैसा आला दर्जा के अलफ़ाज़ एक अजीब तर्तीब के साथ रखे गए हैं उसी तरह पर हक़ायक़ और मआरिफ़ को उनमें वर्णन किया गया है और यह रियायत इन्सान का काम नहीं कि वह हक़ायक़ और मआरिफ़ को वर्णन करे और फ़साहत-ओ-बलाग़त के मुरातिब को भी मलहूज़ रखे।"

फ़रमाया कि "एक जगह फ़रमाता है يَتْلُوْا صُحُفًا مُّطَهَّرَةً فِيْهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ (अल् बय्यनः : 3-4) अर्थात उन पर ऐसे सहायफ़ पढ़ता है कि जिनमें हक़ायक़-ओ--मआरिफ़ हैं। इंशा वाले जानते हैं कि इंशा परदाज़ी में पाकीज़ा तालीम और अख़-लाक़-ए-फाज़िला को मलहूज़ रखना बहुत ही मुश्किल है और फिर ऐसी मोस्सर और जाज़िब तालीम देना जो सिफ़ात-ए-रज़ीला को दूर करके भी दिखावे और उनकी जगह आला दर्जा की खूबियां पैदा कर दे। अरबों की जो हालत थी वह किसी से पोशीदा नहीं। वे सारे ऐबों और बुराईयों का मजमूआ बने हुए थे और सदीयों से उनकी यह हालत बिगड़ी हुई थी परंतु किस क़दर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के फ़ैज़ और बरकात में क़ुव्वत थी कि तेईस बरस के अंदर कुल देश की काया पलट दी। यह तालीम ही का असर था।" फ़रमाया कि "एक छोटी से छोटी सूरत भी अगर क़ुरआन शरीफ़ की लेकर देखी जाए तो मालूम होगा कि इस में फ़साहत-ओ-बलाग़त के मुरातिब के इलावा तालीम की ज़ाती ख़ूबियों और कमालात क़व्वास में भर दिया

शेष पृष्ठ 13 पर

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad